ग्रामीण महिला विकास संस्थान

Gramin Mahila Vikas Sansthan

वार्षिक प्रतिवेदन 2023-2024

ANNUAL REPORT 2023-24

Website : www.gmvs.org.in

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

महिला सशक्तिकरण सिलाई प्रशिक्षण

एच.जी. फाउण्डेशन कार्यक्रम, जयपुर

सुरेश सिंह रावत
विधायक, पुष्कर
जल संसाधन मंत्री
राजस्थान सरकार

सत्यमेव जयते

कार्यालय :
यूनिवर्सिटी तिराहे के पास
भूणाबाय, अजमेर (राजस्थान)
निवास : बाबा फार्म, मु.पो.–मुहामी,
वाया–गगवाना, जिला–अजमेर (राजस्थान)

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बुबानी–किशनगढ़, जिला अजमेर द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष 2023–24 में भी अपनी कार्य गतिविधियों का संकलन वार्षिक प्रतिवेदन के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। यह प्रयास न केवल संस्थान की उपलब्धियों को दर्शाता है, बल्कि समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण एवं उनके विकास की दिशा में किए जा रहे कार्यों की प्रभावशीलता को भी उजागर करता है।

बालिका के जन्म से लेकर उसे आत्मनिर्भर बनाने तक सरकार हर कदम पर उसके साथ खड़ी है। महिलाओं को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से भामाशाह योजना के तहत उन्हें परिवार का मुखिया बनाया गया है। साथ ही, महिला स्वयं सहायता समूह, कौशल विकास कार्यक्रम एवं अन्य योजनाओं के माध्यम से उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, विधवा एवं तलाकशुदा महिलाओं के लिए भी विशेष योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जिससे वे सम्मानपूर्वक अपना जीवन यापन कर सकें। महिलाओं का सर्वांगीण विकास हमारी प्राथमिकता है, और इस दिशा में हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि ग्रामीण महिला विकास संस्थान न केवल महिलाओं के उत्थान के लिए कार्य कर रहा है, बल्कि महिला शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, जनचेतना, जल संरक्षण, किसान संवर्धन, बालश्रम उन्मूलन आदि क्षेत्रों में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मैं इस सराहनीय प्रयास के लिए संस्थान को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह संस्था भविष्य में भी समाज सेवा एवं महिला सशक्तिकरण के कार्यों में इसी प्रकार आगे बढ़ती रहेगी।

(सुरेश सिंह रावत)
केबिनेट मंत्री
जल संसाधन विभाग
राजस्थान सरकार

अनिल कुमार माथुर
अध्यक्ष
ग्रामीण महिला विकास संस्थान

अध्यक्षीय सम्बोधन

मैं, ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से 2023–24 के वार्षिक रिपोर्ट में आपका स्वागत करता हुँ। इस वर्ष का लेखा–जोखा हमारे संस्थान के निरंतर प्रयासो और महिला सशक्तिकरण की दिशा में कि गई उपलब्धियो को दर्शाता है। यह हमारे लिए गर्व का क्षण है कि हम ग्रामीण महिलाओ के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में सफल रहे।

इस वर्ष हमने अनेक महत्वपूर्ण पहल कि है, जो हमारे संस्थान के मिशन–ग्रामीण महिलाओ को आर्थिक, सामाजिक और मानसिक रूप से सशक्त बनाने के साथ मेल खाती है। हम उनके अधिकारो, स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार के अवसरों को सुनिश्चित करने में निरंतर प्रयासरत है। महिलाओ की आर्थिक स्वतंत्रता को बढावा देने के लिए हमने स्वयं सहायता समूहो, कौशल विकास कार्यक्रमो और अन्य पहलूओं में कई महत्वपूर्ण कदम उठाये है।

2023–24 में हमने जो सफलताये हासिल की है, वे हम सभी के सामूहिक प्रयासो का परिणाम है। हमारी कार्यशैली में पारदर्शिता, समर्पण और नवाचार को प्राथमिकता दी गई है। हमारे संस्थान ने न केवल महिलाओ के जीवन स्तर को बेहतर किया है, बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी नई ऊँचाइयॉ दी है। इन उपलब्धियों में सबसे बडी सफलता यह रही कि हमने एक स्थिर और सशक्त समुदाय की ओर कदम बढाए है, जो आने वाले वर्षो में और भी मजबूती से उभरेगा।

यह रिर्पोट हमारे संगठन की समर्पित टीम, सहयोगियों और समुदायो के निरंतर समर्थन का प्रमाण है। मैं सभी का आभार व्यक्त करता हुँ और आशा करता हुँ कि हम सभी के साथ मिलकर आगे भी समाज में बदलाव लाने का कार्य जारी रखेगे।

आगे बढते हुए, हम यह सुनिश्चित करेगें कि आने वाले वर्ष में और अधिक महिलाओ को हमारे प्रयासो का लाभ मिले और हम उनके जीवन में और अधिक सकारात्मक बदलाव ला सके।

आपके समर्थन के लिए धन्यवाद...

(अनिल कुमार माथुर)
GMVS अजमेर

शंकरसिंह रावत
निदेशक
ग्रामीण महिला विकास संस्थान
E-mail : s.s.rawat@gmvs.org.in

निदेशक की कलम से .....

27वें वर्ष 2023–24 के वार्षिक रिर्पोट में आपका स्वागत करते हुए मुझे गर्व और कृतज्ञता का अनुभव हो रहा है। यह वर्ष हमारे संस्थान के लिए प्रेरणा और समर्पण का वर्ष रहा है, जिसमें हमारी टीम, साझेदारो और विशेष रूप से हमारे सेवा क्षेत्र की ग्रामीण महिलाओ की कडी मेहनत ने महत्वपूर्ण उपलब्धियॉ हासिल की है।

हमारे संस्थान का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओ का सशक्तिकरण है, और इस दिशा में हम लगातार आगे बढ रहे है। शिक्षा, कौशल विकास, स्वास्थ्य और सूक्ष्म वित्त जैसी क्षेत्रों में किए गए कार्यो के परिणामस्वरूप हम न केवल महिलाओ के जीवनस्तर को बेहतर बना रहे है, बल्कि सामाजिक ढाचे को भी मजबूत कर रहे है।

इस वर्ष, 2023–24 में, महिलाओ के लाभार्थियो की संख्या में वृद्वि हुई है, हमारी पहुॅच बडी है, और कार्यक्रमों की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। हमारे स्वयं सहायता समूहो और व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमो ने महिलाओ को न केवल आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान की है, बल्कि उनके आत्मविश्वास में भी वृद्वि की है।

इस रिर्पोट में हमारे द्वारा किए गए कार्यो का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है। हांलाकि हम अपनी उपलब्धियों पर गर्व महसूस करते है। लेकिन चुनौतियॉ अभी भी मौजूद है और हमारे आस पास बहुत कुछ करना बाकि है। मुझे विश्वास है कि आपकी निरंतर सहयोग और समर्थन से हम आने वाले वर्षो में और भी अधिक प्रभावशाली कार्य कर पाएंगे।

मैं दिल से धन्यवाद देता हुॅ उन सभी को जिन्होनें हमारे संस्थान को समर्थन दिया। आपका मार्गदर्शन और विश्वास हमारी सफलता की कुंजी है। साथ मिलकर हम ग्रामीण महिलाओ के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए काम करते रहेगे। ताकि न केवल सशक्त बने, बल्कि अपने भविष्य को स्वयं आकार दे सके।

(शंकर सिंह रावत)
सचिव
GMVS अजमेर

Gramin Mahila Vikas Sansthan (GMVS)
Area of Operation and Office Locations

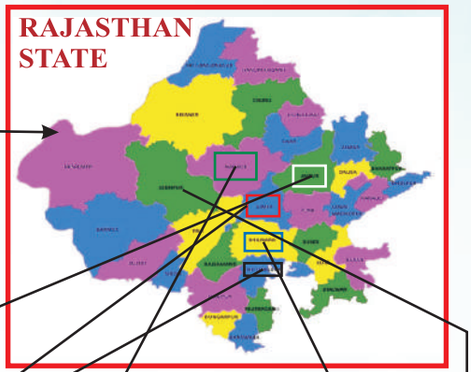

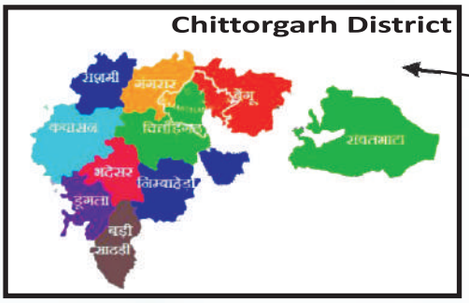

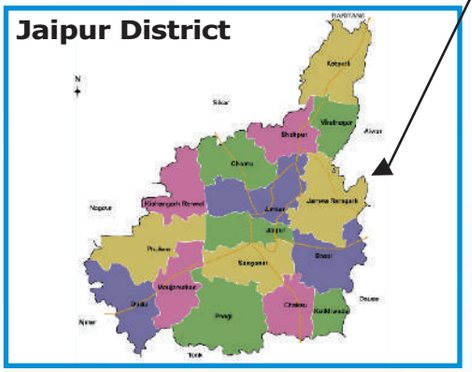

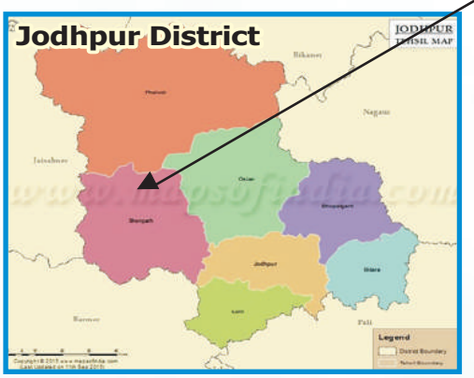

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर राज.
Gramin Mahila Vikas Sansthan-Bubani, Ajmer, Raj.

पृष्ठभूमि :-

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी (अजमेर), राजस्थान संस्था पंजीकरण सोसायटी अधिनियम 1958 की धारा 28 एवं आयकर अधिनियम 1961 की धारा 12–ए व 80जी तथा FCRA एक्ट 1976 के अधीन पंजीकृत एक स्वयं सेवी संस्था हैं।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी (अजमेर), मानव समाज कल्याण के उद्धेश्य से गठित स्वैच्छिक संगठन है। जो विशेष रुप से ग्रामीण महिलाओ के विकास और उत्थान के लिए वृहद स्तर पर ग्रामीण समुदाय के सामाजिक सशक्तिकरण एवं आजीविका संवर्द्धन के लिए निरन्तर कार्य कर रही है। संस्था समाज मे व्याप्त सामाजिक समस्याओं जैसे– स्वास्थ्य, शिक्षा, बच्चो की देखभाल, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, स्वरोजगार आदि सामाजिक मुद्दो पर 1998 से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमो का संचालन कर रही है। वर्तमान में संस्था राजस्थान के 05 जिलों यथा अजमेर, चित्तौड़गढ़, नागौर, जयपुर व भीलवाड़ा में विभिन्न गतिविधियों का संचालन कर रही हैं।

विजन :-

ऐसे सशक्त समाज की स्थापना करना जहाँ ग्रामीण महिलाओं की स्थिति को सुदृढ बनाने तथा साथ ही समाज के हर वर्ग को आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य व रोजगार की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाया जाये।

मिशन :-

मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग से पिछड़े, अभावग्रस्त, ग़रीब समाज की महिलाओं को स्वयं सहायता समूह, कलस्टर व फेडरेशन के माध्यम से आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से सशक्त करना ग्रामीण लोगों, वंचित वर्ग खासकर महिलाओं/बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पेयजल व आजीविका के साधन सुनिश्चित करवाना।

संस्था के उद्देश्य :-

- ❖ समस्याग्रस्त गाँवों में स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था करने में गाँव वालों की मदद करना।
- ❖ ग्रामीण क्षेत्र में ग्रामीणों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें अच्छा स्वास्थ्य बनाये रखने में मदद करना एवं मातृ–शिशु कल्याण कार्यक्रम को गाँव–गाँव तक पॅहुचाना।
- ❖ कृषि एवं पशुपालन के लिए ग्रामीणों को आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराकर उन्हें ज्यादा पैदावार एवं ज्यादा पशुपालन में उनकी समस्याओं को कम करने में मदद करना।
- ❖ महिला विकास में ग्रामीण महिलाओं की रूचि पैदा करना तथा महिला कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं की समस्याओं के निराकरण के लिये महिला मण्डल एवं महिला गोष्ठियों का आयोजन करना।
- ❖ ग्रामीण दस्ताकारों को बढ़ावा देने मे सहयोग एवं रोजगार उपलब्ध कराना।
- ❖ निम्न आय वर्ग के लड़के लड़कियों को उचित शिक्षा दिलवाने की व्यवस्था करना।
- ❖ राजस्थान या राजस्थान के बाहर स्थित संस्थाओं जिनका उद्देश्य ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी जैसा होगा उनसे सहयोग प्राप्त करना एवं गतिविधियों में तालमेल बनाये रखना।
- ❖ सडक दुर्घटनाओं को कम करना।
- ❖ पर्यावरण स्वच्छ रखने के लिए पेड़ पौधों की जागरूकता रखना।
- ❖ भूमि कटाव को रोकने हेतु मेड़ बन्दी।

- महिलाओं को विभिन्न प्रशिक्षणों के माध्यम से आधुनिक तकनीकों से जोड़ना।
- सामुदायिक विकास कार्यक्रम को बढावा देना।
- महिला व बाल विकास कार्यक्रम का संचालन व लोगों को जागरूक बनाये रखना।
- संस्था के उद्देश्यों एवं कार्यकलापों को प्रचारित करना, किताबों का मुद्रण एवं प्रकाशन तथा पुस्तकालयों की स्थापना करना।
- ग्रामीण दस्तकारी को बढ़ावा देने में सहयोग करना क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा करने हेतु खादी ग्रामोद्योग की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए नियमानुसार ऋण प्राप्त करना।
- संस्था के द्वारा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जायेगी जैसे **HIV/AIDS** जागरूकता, सामुदायिक स्तर पर आँखों की जाँच, माता व शिशु स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य पर क्षेत्र विशेष हेतु कार्यक्रम।
- क्षेत्र में अधिक संख्या में ट्रक ड्राईवर परिवारों के होने के कारण संस्था ट्रक ड्राईवर के परिवारों के साथ स्वास्थ्य, शिक्षा व आजीविका पर कार्य करेगी।
- इसके अतिरिक्त संस्था ग्रामीण व शहरी क्षेत्रो में सभी विकास के कार्य क्षेत्र आवश्यकतानुसार करेगी।
- ट्रक चालको एवं क्लीनरों की आँखों की जाँच कर चश्मा प्रदान करना तथा नियमित आँखों की जाँच तथा देखभाल हेतु प्रेरित करना।
- संस्था ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रो में तकनीकी प्रोत्साहन एवं कौशल विकास पर कार्य करेगी।
- संस्था महिलाओं की फेडरेशन को मजबूत करने एवं SHG बनाने व सशक्त करने का कार्य करेगी।
- संस्था मानवीय आवश्यकता हेतु समुदाय को लगातार जाग्रत करेगी।
- संस्था द्वारा शिक्षा प्रसार हेतु शिक्षण कार्य कराया जायेगा एवं तकनीकी विज्ञान प्रशिक्षण की व्यवस्था कराई जायेगी।
- संस्था प्राकृतिक सौन्दर्य को बढ़ाने एवं प्रदूषण दूर करने हेतु बंजर भूमि पर वृक्षारोपण का कार्य करने की व्यवस्था करेगी।
- महिला अधिकारों के प्रति सदस्यों को सजग करना एवं अधिकार प्राप्ति हेतु वातावरण का निर्माण करना एवं महिला सशक्तिकरण के द्वारा उनकी परिवार एवं समाज में बेहतर जगह बनाना।
- ऐसी गतिविधि करना जिससे गरीब महिलाओं, स्वयं सहायता समूहों तथा उनके परिवार का सामाजिक व आर्थिक उत्थान हो सके।
- महिलाओं की सामाजिक कार्यो में सहभागिता सुनिश्चित करना।
- संस्था आर्थिक रूप से गरीब छात्रों को अपने अध्ययन हेतु पुस्तकों एवं फीस आदि की निःशुल्क व्यवस्था करेगी।
- लघु वित्त उद्यमिता पर प्रशिक्षण व कौशल विकास का कार्य करना।
- महिलाओं की जरूरतों जैसे मातृत्व संरक्षण, साक्षरता, शिक्षा, रोजगार और प्रशिक्षण आदि के अवसरों को बढ़ाना ताकि समाज के विभिन्न वर्गो में उन्हें पर्याप्त ध्यान व संसाधन मिल सके।
- स्कूल और कॉलेजो मे जागरूकता बैठक कर किशोर बालिकाओं को स्वास्थ्य, प्रजनन व यौन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराना।
- ट्रक चालको एवं क्लीनरों के बच्चों को उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति दिलाना।

लक्षित हस्तक्षेप परियोजना चित्तौड़गढ़ (माईग्रेन्ट टी. आई.)
Target Intervention Program Chittorgarh 2023-24

राजस्थान स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी जयपुर के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा चित्तौड़गढ़ जिले में टी0 आई0 (TI) कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा हैं। चित्तौड़गढ़ जिले में पिछले 1 मार्च 2014 से ग्रामीण महिला विकास संस्थान के माध्यम से निरंतर प्रवासी लोगों के उच्च जोखिम व्यवहार को जानकर उनको TI कार्यक्रम द्वारा सुविधा दी जा रही है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य एचआईवी एड्स से संक्रमित व्यक्तियों को सरकारी सुविधाओं से जोड़ना है। कार्यक्रम राजस्थान के स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी जयपुर राजस्थान के माध्यम से ग्रामीण महिला विकास संस्थान चित्तौड़गढ़ को यह शुभ अवसर निरंतर प्रदान किया जा रहा है, ताकि संस्थान प्रवासी लोगों के लिए चित्तौड़गढ़ जिले में एच आई वी एड्स जागरूकता कार्यक्रम का संचालन कर सके। संस्थान द्वारा प्रवासी लोगों को एचआईवी एड्स व टीबी के प्रति जागरूक करने के साथ–साथ परामर्श जांच की सुविधा उपलब्ध करवाना है। 1097 टोल फ्री नंबर की जानकारी दी जा रही है।

मशीनी युग होने के बावजूद प्रवासी मजदूर लोगों का एक अपना महत्वपूर्ण योगदान भारत देश के प्रति समर्पित रहा है। भारत का एक बहुत बड़ा प्रवासी मजदूर लोगों का समुदाय रोजी–रोटी कमाने के लिए अनेक क्षेत्रों में रहकर साधारण जीवन यापन कर रहे हैं। प्रवासी मजदूर काफी मेहनती वर्ग है। इनके साहस और मेहनत के कारण विभिन्न क्षेत्रों में निर्माण कार्य, लोडिंग, अनलोडिंग का कार्य, सीमेंट फैक्ट्री, कपास फैक्ट्री, खाद फैक्ट्री, माइंस. होटल में कार्य करके योगदान कर रहे हैं। प्रवासी मजदूर के रूप में अपनी पहचान भारत में बनाए हुए हैं। राजस्थान राज्य के अनेक जिलों में प्रवासी लोग रहते हैं जो अपना जीवन यापन बहुत ही मुश्किल से कर पाते हैं, परंतु उन की मजबूरी है।

इस कार्यक्रम के तहत एचआईवी एड्स संक्रमित लोगों को जागरूक करना होता है, ताकि उनके जोखिम पूर्ण व्यवहार को बदलकर, उन व्यवहार में कमी लाई जा सके। जोखिम पूर्ण व्यवहार जैसे शराब का सेवन करना, एक से अधिक लोगों का उपयोग करना, अफीम, गांजा जैसे नशों का सेवन करना, यौन कर्मियों के साथ असुरक्षित यौन संबंध स्थापित करना इत्यादि। प्रवासी मजदूर लोग जाने अनजाने उच्च जोखिम पूर्ण व्यवहार का हिस्सा बन जाते हैं। इसी कारण उन्हें व उनके परिवार को इसका भारी मूल्य चुकाना पड़ता है। देश में प्रवासियों के लिए कोई भी ऐसी सुविधा नहीं है, जिसके माध्यम से प्रवासियों को अपने क्षेत्र से निकलकर बाहर कमाने के लिए न जाना पड़े।

संस्थान प्रवासियों का रजिस्ट्रेशन करने के बाद वन टू वन मीटिंग, ग्रुप मीटिंग करने के बाद, उनके व्यवहार की जानकारी लेना। तत्पश्चात परामर्श करने के बाद, निरूशुल्क स्वास्थ्य जांच करवाई जाती है। TI कार्यक्रम का उद्देश्य, अनेक गतिविधियों के माध्यम से प्रवासी मजदूरों को संस्थान से जोड़ना व सरकारी /गैरसरकारी योजनाओं की जानकारी उनको प्राप्त करवाना। इन योजनाओं से एचआईवी एड्स व टीबी से संक्रमित लोगों को व प्रवासियों को मिलने वाली श्रमिक कार्ड जैसी योजनाओं से जुड़वाना है। एचआईवी व टीबी की जांच पर लक्षण पाए जाने पर प्रवासी लोगों को ICTC, ART सेंटर, डॉट सेंटर से जुड़वाना है। साथ ही उनको अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने के लिए निरंतर प्रेरित करना है। प्रवासी कार्यक्रम के तहत चित्तौड़गढ, सावा, निंबाहैड़ा, कपासन, चंदेरिया के विभिन्न क्षेत्रों पर जितनी भी फैक्ट्रियां है। वह उन स्थानों पर कार्यरत प्रवासी लोगों को TIकार्यक्रम की जानकारी प्रदान करने के साथ उनको TI से मिलने वाली सुविधाओं के बारे में भी जानकारी देनी है। उनको संस्थान से जोड़ना है। इन सभी जगह पर संस्थान द्वारा क्रियान्वित कार्यक्रम से प्रवासियों को सुविधा दी जा रही है। इन सभी लोगों के साथ उनके निवास स्थान कार्यस्थल के मिलने के स्थान पर जाकर संपर्क किया जाता है। इन प्रवासी लोगों को होटल, रेस्टोरेंट, चाय की दुकान, पान की दुकान, सब्जी या फल का ठेला, जनरल स्टोर, किराना स्टोर, वाइनशॉप, लेबर कालोनी तथा रेजिडेंस कॉलोनी आदि स्थानों पर मिल जा सकता है। यह प्रवासी फैक्ट्री क्षेत्र के आसपास ही रहकर अपना जीवनयापन करते हैं। TI कार्यक्रम के अंतर्गत इनको DIC की भी सुविधा उपलब्ध करवाई जाती है। DIC में आकर इनको मनोरंजन, विश्राम, परामर्श, स्वास्थ्य सेवा, कंडोम आदि से जुड़ी जानकारी प्रदान की जाती है।

प्रवासी लोग अधिकतर अकेले आते हैं, परंतु कुछ प्रवासी लोग समूह में भी आते हैं। जिनमें उनके रिश्तेदार, दोस्त, सहकर्मी साथी होते हैं। यह वासी लोग जहां भी रहते हैं, एक ही कमरे में 10, 15, 20 लोगों का एक साथ समूह रहता है। कई बार कमरे में भी अधिक लोग रहते हैं। प्रवासी मजदूर का कार्य करने का समय 8 से 12 या 16 घंटे रहता है, क्योंकि वह लोग बाहर से आकर यहां काम कर रहे होते हैं। इस कारण यह लोगअधिक से अधिक काम करते हैं ताकि अधिक धन प्राप्त कर कुछ रुपया पैसा अपने घर गांव में ले जा सके। अधिकतर प्रवासी अपने परिवार पत्नी को छोड़कर यहां अकेले रहते हैं। वह जिन लोगों के साथ में रहते हैं। वह समूह में रहते हैं। इसके कारण इनको तरह–तरह की विचारधारा, अलग–अलग स्वभाव के लोगों से मिलना–जुलना होता है। इनमें एक

ही कमरे में विवाहित–अविवाहित 18 से 50 साल के लोग एक साथ रहते हैं। जिसके कारण इनका व्यवहार कुछ जोखिम पूर्ण व्यवहार अपने आप ही हो जाता है। बहुत सारे लोगों का व्यवहार जोखिम पूर्ण नहीं रहता परंतु जाने–अनजाने में उनका व्यवहार जोखिम पूर्ण हो जाता है। इसके कारण संक्रमण एक प्रवासी से दूसरे प्रवासी तक अन्य प्रवासियों में फैल जाता है, क्योंकि प्रवासी मजदूर अधिकतर कम शिक्षित रहते हैं। इसीलिए इनका हर पहलुओं पर जागरूकता कम होती है। HIV/AIDS & TB के प्रति प्रवासियों को जानकारी बिल्कुल नहीं होती है। इस कारण से HIV/AIDS & TB का प्रसार इनमें अधिक पाया जाता है।

भारत देश में HIV/AIDS & TB जैसे खतरनाक संक्रमणों से जूझ रहा है। राजस्थान के अधिकतर जिलों में HIV/AIDS & TB संक्रमित लोग रहते हैं। इनके अलावा हेपेटाइटिस B&C संक्रमित व्यक्तियों का भी इलाज करवाया गया। TI स्टाफ की सबसे बड़ी जिम्मेदारी HIV/AIDS & TB STI (यौनरोग) के साथ हेपेटाइटिस, कोरोना संक्रमित लोगों को सुरक्षित रखना है। व दूसरों को सूचित रखने में सहयोगी बनना है।

संस्थान की TI सेवाएं निम्नलिखित है :-

1. **वन टू वन मीटिंग, ग्रुप मीटिंग :-** इनके माध्यम से प्रवासी लोगों को एक–एक या समूह में मिलना समूह पर चर्चा में बैठक करना। उनको HIV/AIDS & TB STI/RTI आदि के प्रति जागरूक करना संस्था के कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी है । कंडोम का सही उपयोग करना, इसके प्रति जागरूक करना।

2. **मिड़ मीडिया :-**संस्थान द्वारा नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से प्रवासी लोगों को HIV/AIDS- STI/RTI के प्रति जागरूक करना। कंडोम का सही उपयोग,इसके प्रति जागरूक करना।

3. **जागरूकता शिविर :-** इसका आयोजन प्रवासी को निशुल्क स्वास्थ्य शिविर की जानकारी देने के लिए किया जाता है. ताकि अधिक से अधिक संख्या में प्रवासी लोग अपनी जांच करवा सके।

4. **कांग्रेगेशन इवेंट्स :-** इसके माध्यम से जहां पर प्रवासियों संख्या में अधिक से अधिक लोग एकत्रित होते हैं। वहां पर इस इवेंट के माध्यम से TI कार्यक्रम की जानकारी अधिक से अधिक लोगों को करवाना।

5. **डिमांडजनरेट गतिविधि :-** इस कार्यक्रम को प्रवासी लोगों की जरूरत के अनुसार करवाया जाता है। इसके माध्यम से HIV/TB, STI/RTI, कंडोम के प्रति जागरूक किया जाता है।

6. **एडवोकेसी :-** इस गतिविधि में प्रवासी लोगों के लिए की जाने वाली एडवोकेसी भी है जिसमें ठेकेदार, सरदार, सुपरवाइजर अन्य लोग जो प्रवासियों के लिए TI गतिविधियों के आयोजन में बाधक हो तो. उनको इस कार्यक्रम के माध्यम से समझाइश की जाती है। इसके लिए एडवोकेसी कमेटी बनी हुई है।

7. **रिव्यू मीटिंग :-** यह मीटिंग साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक होती है। इसके माध्यम से सभी स्टाफ के लोगों के कार्यों का अवलोकन PD, PM, M&E करते हैं। TI संबंधित सभी रिकॉर्ड्स जांच में डाटा मूल्यांकन का काम PD, PM, M&E की जिम्मेदारी होती है।

8. **क्राइसिस :-** प्रवासी लोगों के बीच में यदि कोई वाद–विवाद हो जाए तो, संस्थान के स्टाफ, क्राइसिस कमेटी के माध्यम से वाद–विवाद को सुलझाने में मदद करती है।

9. **आउटलेट्स :-** इन आउटलेट्स में प्रवासी कंडोम को खरीद सकते हैं। यह आउटलेट्स प्रवासियों की सुविधा को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं, जिसे आसानी से कंडोम प्रवासी खरीद सकते हैं।

10. **DIC :-** संस्थान के पास तीन DIC है, 1. DIC ऑफिस , 2. DIC चंदेरीया, 3. सावा में है। प्रवासी मजदूर लोग

मनोरंजन, आराम, परामर्श, क्लिनिक, जैसी सुविधाएं प्राप्त करते हैं। यह सब सुविधा निशुल्क है। कंडोम खरीदने की सुविधा उपलब्ध है । DIC के लिए कमेटी भी बनी हुई है। जो प्रवासी लोगों को मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी उपलब्ध करवाती है।

11. **STI/RTI** फॉलोअप:- यदि किसी प्रवासी में STI/RTI के लक्षण पाए जाते हैं तो,उसको डॉक्टरी जांच करवा कर दवाई दी जाती है। उसको फॉलो किया जाता है।

12. परामर्श :– परामर्श कर्ता द्वारा 14 प्रकार का परामर्श किया जाता है। प्रवासी के उच्च जोखिम पूर्ण व्यवहार को जानकर,उसमें कमी लाना है। प्रवासी को समझना ही परामर्श कर्ता का मुख्य कार्य है।

13. निशुल्क स्वास्थ्य जांच :– निशुल्क स्वास्थ्य जांच के साथ HIV की जांच की जाती है। यदि HIV पॉजिटिव आता है तो,उसको रेफरल किया जाता है। यदि VDRL STI जांच किट मौजूद हो तो,STI लक्षणों की भी जांच फ्री की जाती है।

14. रजिस्ट्रेशन :–प्रवासी लोगों का रजिस्ट्रेशन तीन प्रकार के माध्यम से होता है। DIC, परामर्श, कैंप इन सभी सर्विस में से किसी एक के माध्यम से प्रवासियों का नामांकन किया जाता है। प्रत्येक वर्ष 10000 लोगों का रजिस्ट्रेशन करने का टारगेट पूरा करना होता है। जो प्रवासी चीजों की पूर्ण व्यवहार से सम्मिलित होते हैं उनको ही इस कार्यक्रम से जोड़ना है।

15. रेफरल व लिंकेज :– प्रवासी लोगों को आवश्यकता अनुसार उनका DIC, ICTC, ART, DOT सेंटर से लिंक करवाना है।

16. सरकारी गैर सरकारी :– प्रवासी लोगों को सरकारी गैर सरकारी सुविधाओं, योजनाओं से जोड़ना है,ताकि वह किसी भी जिले राज्य में रहे सुविधाओं का लाभ ले सकते हैं। इस वर्ष भी अन्य वर्षो की भांति 10000 प्रवासी मजदूर लोगों को HIV के प्रति जागरूक किया गया, और उनका रजिस्टर्ड किया गया। प्रवासी लोग राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, पंजाब, झारखंड, हरियाणा, बिहार, गुजरात, उड़ीसा, असम से संबंधित है। अधिकतर प्रवासी लोग इन सभी राज्यों के जिलों, पंचायत, तहसीलों के गांव से हैं। प्रवासी लोग अधिकतर ग्रामीण क्षेत्र से है। प्रवासी लोग एक राज्य से दूसरे राज्य में इधर–उधर पलायन करते रहते हैं।

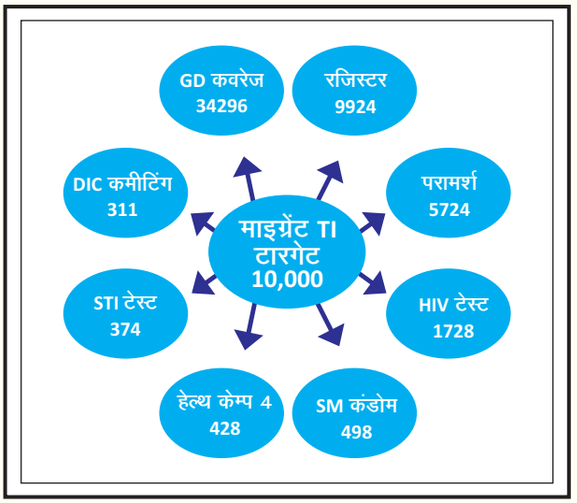

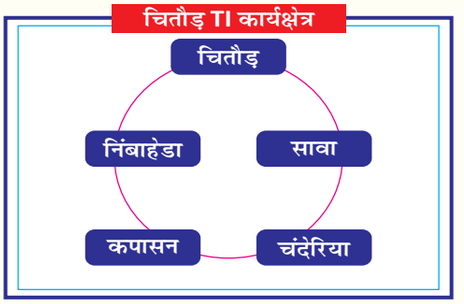

परियोजना का उद्देश्य है :-

1. DIC में बैठक करना।
2. परामर्श के साथ जांच करना।
3. अधिक से अधिक प्रवासी लोगों को TI से जोड़ना।
4. सरकारी/गैर सरकारी सुविधाओं से जुड़ाव करना।
5. 31 इंडिकेटर का अनुसरण करना।
6. 40000 लोगों से एकल/समूह बैठक करना।
7. HIV/STI पॉजिटिविटी आने पर उनको रेफरिंग करना।
8. प्रवासियों को उनकी सुविधा के लिए TI से जोड़ना।
9. कंडोम उपलब्ध करवाना, व उस का सही उपयोग समझना।
10. प्रवासियों को अन्य राज्यों में जाने पर, सरकारी सुविधाओं से जुड़वाना।
11. 10000 उच्च जोखिम व्यवहार के प्रवासी लोगों का रजिस्ट्रेशन करना।

रणनीति :-

1. छोटी व बड़ी साइट्स को कवरेज करना।
2. अधिकतर प्रवासी लोगों तक पहुंच बनाना।
3. महिलाओं को उनके अनुसार बैठक आयोजित करना।
4. उच्च जोखिम व्यवहार के प्रति लोगों की समझ बनाना।
5. प्रवासी लोगों को सुरक्षित व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित करना।
6. सभी गतिविधियों में सर्विसेज प्रवासियों के समय अनुसार करवाना।
7. अनुकूल वातावरण बनाकर सर्विसेज प्रवासी तक पहुंचाना।
8. एडवोकेसी क्राइसिस मैनेजमेंट के प्रति जागरूक करना।
9. कंडोम के प्रति जागरूक करना।
10. कंडोम की उपयोगिता समझाना।
11. TI गतिविधियों व सर्विसेज से अधिक संख्या में प्रवासी लोगों को जोड़ना।
12. मिड–मीडिया से लोगों में HIV/AIDS, STI/RTI, TB, ART सेंटर के प्रति जागरूक करना।

उपलब्धि :-

1. HIV/STI की जांच CBT, VDRL KIT के माध्यम से करना।
2. फैक्ट्री में आसानी से पहुंच बनाना।
3. स्टेक होल्डर,सुपरवाइजर से समय–समय पर सहायता प्राप्त करना।
4. कलेक्टर SDM, रसद विभाग व अन्य विभागो तक पहुंच बनाना।
5. महिला व पुरुषों को ध्यान में रखते हुए सर्विसेज सुविधाओं से जुड़वाना।
6. प्रवासियों को उनके अनुसार TI सुविधा उपलब्ध करवाना।
7. PMO/CM&HO, ICTC प्रभारी,परामर्श कर्ता के साथ नेटवर्क बनाना।

8. एडवोकेसी क्राइसिस के माध्यम से प्रवासी को सर्विसेज की समझ बनाना।
9. प्रवासियों की सुगमता के लिए उनके क्षेत्र में 50 कंडोम आउटलेट्स से जुड़वाना।
10. अधिकतर प्रवासी लोगों कंडोम की उपयोगिता समझाना।
11. अधिकतर प्रवासी लोगों कंडोम उपलब्ध करवाना
12. प्रवासियों को अन्य राज्यों में जाने पर, सरकारी सुविधाओं से जुड़वाना।
13. प्रवासियों को अन्य राज्यों में जाने पर, आवश्यकता अनुसार मदद करना। प्रवासियों को गैर सरकारी व सरकारी योजनाओं की जानकारी देना,समझ बनाना,सर्विसेज सुविधाओं से जुड़वाना।

सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम 2023-24
H.G. Foundation Stitching Training Program

परिचय : सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य व्यक्तियों को मूल्यवान सिलाई कौशल प्रदान करना है, जिससे वे रोजगार के अवसरों का लाभ उठा सकें या कपड़ा उद्योग में अपना स्वयं का छोटा व्यवसाय शुरू कर सकें। यह रिपोर्ट कार्यक्रम की गतिविधियों, उपलब्धियों, चुनौतियों और भविष्य की योजनाओं का अवलोकन प्रदान करती है।

कार्यकारी सारांश : सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण सत्र प्रदान करने में महत्वपूर्ण प्रगति की। कुछ तार्किक चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, कार्यक्रम ने सभी निर्धारित प्रशिक्षण सत्रों का सफलतापूर्वक संचालन किया और प्रतिभागियों के सिलाई कौशल में उल्लेखनीय सुधार देखा। प्रतिभागियों की सहभागिता उच्च रही, प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता के बारे में सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। आगे देखते हुए, कार्यक्रम का लक्ष्य इन उपलब्धियों को आगे बढ़ाना और आगामी प्रभाव को और बढ़ाना है।

प्रशिक्षण गतिविधियाँ :

<u>सभी प्रतिभागियों द्वारा सीखी गई विभिन्न सिलाई गतिविधियाँ –</u>

- सभी प्रतिभागियों को सिलाई मशीनों और अन्य मशीनों का बुनियादी ज्ञान दिया गया।
- प्रशिक्षक द्वारा महिलाओं को सिलाई उपकरणों के बारे में सभी जानकारी दी गई।
- प्रतिभागियों द्वारा सरल कटिंग डिजाइन सीखे गए।
- गर्मियों के कोट की सरल कटिंग और सिलाई।
- बेबी फ्रॉक।
- महिलाओं के ब्लाउज, पेंट, पटियाला सूट।
- छाता फ्रॉक, स्कर्ट इन सभी डिजाइन की कटिंग और सिलाई महिलाओं द्वारा सीखी गई।
- इन सिलाई गतिविधियों के दौरान बैंक अधिकारी भी महिलाओं के साथ बैठक करने और उन्हें स्वयं सहायता समूहों के बारे में बुनियादी जानकारी देने के लिए आए थे।
- उन्होंने **SHG** के बारे में बुनियादी जानकारी दी और महिलाओं को **SHG** बनाने के लाभों के बारे में बताया।

सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन जनवरी, 2024 माह की 17 तारीख को आयोजित किया गया है। इसका उद्देश्य कौशल विकास के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना है। प्रत्येक केंद्र में 30 उत्साही प्रतिभागियों को शामिल किया गया है, कुल 60 महिलाओं ने सिलाई सीखने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दृढ़ समर्पण दिखाया है। इस महीने में सिलाई प्रशिक्षण प्रक्रिया जारी है। सभी 60 महिलाएं बेहतरीन सिलाई सीखने और अपना लक्ष्य पाने की कोशिश कर रही हैं। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन उनकी इच्छा और साहस सिलाई गतिविधियों को सीखने में कम नहीं हुआ। दर्जी ऑनलाइन के सीईओ और जीएमवीएस सचिव ने सिलाई केंद्र का दौरा किया और महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने और उनकी आजीविका कमाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित किया। हम उन्हें बाजार से जोड़ना चाहते हैं, इसलिए महिलाओं को डॉक्टर एप्रन और बैग सिलाई का काम दिया गया और हम उन्हें अन्य काम भी देने के लिए नियमित रूप से प्रयास कर रहे हैं। महिलाओं ने मास्टर ट्रेनरों की मदद से समय पर डॉक्टर एप्रन का काम पूरा किया। कुछ महिलाएं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करती हैं और अभी से कमाई की गतिविधियों से जुड़ने की कोशिश करती हैं।

जयपुर जिले के निमेरा गांव में एचजी फाउंडेशन के उदार वित्तीय सहयोग से 60 महिला सिलाई प्रशिक्षण केंद्र संचालित हो रहे हैं। संस्था के अधिकारियों की कड़ी निगरानी में परियोजना सुचारू रूप से आगे बढ़ रही है। एचजी फाउंडेशन और जीएमवीएस (ग्रामीण महिला विकास संस्थान) के निदेशकों द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार विशेषज्ञ प्रशिक्षक महिलाओं को लगन से प्रशिक्षण दे रहे हैं।

सिलाई सीखने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सभी महिलाओं द्वारा दिखाई गई प्रतिबद्धता सराहनीय है। मास्टर ट्रेनर निर्धारित पाठ्यक्रम का सावधानीपूर्वक पालन कर रहे हैं और एचजी फाउंडेशन और जीएमवीएस द्वारा निर्धारित लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। प्रशिक्षण में पारंपरिक राजस्थानी परिधानों और निर्यात के लिए तैयार औद्योगिक परिधानों की सिलाई सहित कई तरह के कौशल शामिल हैं।

निर्यात कंपनियों और अनुभवी उद्योग पेशेवरों के साथ संबंध स्थापित करने के प्रयास सकारात्मक परिणाम दे रहे हैं। दोनों प्रशिक्षण केंद्रों में निर्यात कंपनियों के निदेशकों द्वारा किए गए दौरे ने महिलाओं को अपनी आजीविका के प्रयासों के लिए अंतर्दृष्टि और प्रोत्साहन प्राप्त करने के अमूल्य अवसर प्रदान किए हैं।

आगाज की आवाज ऑनलाइन के संपादक और जीएमवीएस के सचिव ने सिलाई केंद्र का दौरा किया और इस पहल के महत्व और प्रभाव को रेखांकित किया। इस महिने निमेरा गांव में महिला सशक्तिकरण और कौशल विकास गतिविधियों में सबसे आगे रहे। अंतरर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उत्सव के दौरान वित्तीय स्वतंत्रता और आजीविका कमाने के लिए प्रोत्साहन पर जोर दिया गया, जिसे सिलाई सीखने की गतिविधियों के साथ जोड़ा गया। इस कार्यक्रम में एचजी फाउंडेशन के श्री चर्चित दाधीच और श्री दीपक झा, जीएमवीएस टीम, सभी 60 महिला प्रतिभागी, प्रशिक्षक और निर्यात कंपनियों के निदेशक/सीईओ, गांव के नेता, ब्लॉक बोर्ड के सदस्य और सम्मानित अतिथियों सहित कई प्रमुख हस्तियां शामिल हुईं। प्रतिभागियों को उनके अधिकारों के बारे में बताया गया और विशिष्ट अतिथियों द्वारा कौशल विकास और आजीविका गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक संचालन जीएमवीएस के सचिव शंकर सिंह रावत ने किया। महिलाओं की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, अजमेर के दर्जी ऑनलाइन के विशेषज्ञ मास्टर ट्रेनर श्री पपू सिंह द्वारा कटिंग और नई सिलाई तकनीकों का विशेष प्रशिक्षण दिया गया। उनके मार्गदर्शन में एक कौशल विकास मूल्यांकन और प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें शीर्ष प्रदर्शन करने वालों को उपहार वितरित किए गए और सभी उपस्थित लोगों को पानी की बोतलें प्रदान की गईं। 15 मार्च, 2024 को एक औद्योगिक शैक्षिक दौरे का उद्देश्य प्रशिक्षण और उत्पादों की गुणवत्ता को बढ़ाना था। पुष्कर और अजमेर में नीला श्याम कंपनी, ऑनलाइन दर्जी और लोकल 2 ग्लोबल जैसी प्रमुख निर्यात कंपनियों के दौरे ने बाजार के रुझान, नए डिजाइन, फैशन, पश्चिमी, भारतीय और बहुसांस्कृतिक परिधानों की कटिंग और सिलाई तकनीकों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की। इस शैक्षिक दौरे के दौरान प्रतिभागियों को नवीन कार्य तकनीकों से परिचित कराया गया। इसके अतिरिक्त, महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने और समुदाय के भीतर सहयोग की भावना को बढ़ावा देने के लिए स्वयं सहायता समूह की बैठकें और बचत गतिविधियाँ आयोजित की गईं। कुल मिलाकर, इस महीने कौशल विकास, ज्ञान वृद्धि और आर्थिक सशक्तिकरण पहलों के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में एक ठोस प्रयास देखा गया। प्रतिभागियों की सहभागिता :

1. **प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया :**

   • प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रासंगिकता और उपयोगिता के बारे में सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली।

   • प्रतिभागियों ने सहायक शिक्षण वातावरण और समर्पित प्रशिक्षकों के लिए प्रशंसा व्यक्त की।

2. **प्रतिभागियों की सफलता की कहानियाँ :**

   • कई प्रतिभागियों ने व्यक्तिगत परिधान और सहायक उपकरण बनाकर अपने नए अर्जित कौशल का प्रदर्शन किया।

चुनौतियाँ जिनका सामना किया गया :

1. विशेष सिलाई उपकरण और सामग्री तक सीमित पहुँच ने कुछ प्रशिक्षण गतिविधियों को संचालित करने में चुनौतियाँ खड़ी कीं।

2. कुछ प्रतिभागियों को परिवहन संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ा, जिससे नियमित रूप से प्रशिक्षण सत्रों में भाग लेने की उनकी क्षमता प्रभावित हुई।

3. महिला सशक्तिकरण के लिए ग्राम प्रधान और अन्य ग्रामीणों को जागरूक करें और अपने गांव में सिलाई केंद्र चलाने के लिए उनसे अनुमति लें।

4. गांव की महिलाओं के लिए सिलाई प्रशिक्षण केंद्र चलाने के लिए ग्राम प्रधान के साथ बैठक करें।

5. कौशल विकास प्रशिक्षण के लिए महिलाओं को जागरूक करें।

6. सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने में रुचि रखने वाली महिलाओं को खोजने के लिए लक्षित आउटरीच प्रयासों की आवश्यकता हो सकती है। इस बारे में जानकारी फैलाने और प्रतिभागियों की भर्ती करने के लिए सामुदायिक नेताओं, स्थानीय महिला समूहों या सामाजिक सेवा संगठनों के साथ काम करने पर विचार करें।

7. कुछ प्रतिभागियों को भाषा या साक्षरता संबंधी बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है जो प्रशिक्षण सामग्री के साथ पूरी तरह से जुड़ने की उनकी क्षमता में बाधा डाल सकती हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी प्रतिभागी प्रभावी रूप से भाग ले सकें, अनुवादित सामग्री, दृश्य सहायता या साक्षरता कक्षाओं जैसी सहायता प्रदान करें।

8. प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान व्यस्त और प्रेरित रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासकर अगर उन्हें प्रतिस्पर्धी प्राथमिकताओं का सामना करना पड़ता है या अपनी क्षमताओं में आत्मविश्वास की कमी होती है। प्रतिभागियों को कार्यक्रम पूरा करने के लिए प्रेरित और प्रतिबद्ध रहने में मदद करने के लिए प्रोत्साहन, सलाह के अवसर और निरंतर सहायता प्रदान करें।

9. सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों को संबोधित करना जो महिलाओं को सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से हतोत्साहित कर सकते हैं, चुनौतीपूर्ण हो सकता है। एक सहायक और समावेशी वातावरण बनाने के लिए काम करें जहाँ सभी प्रतिभागी अपनी पृष्ठभूमि या परिस्थितियों की परवाह किए बिना मूल्यवान और सम्मानित महसूस करें। सिलाई केंद्र पर आने के दौरान महिलाओं को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे – अपने परिवार, बच्चों के प्रति उनकी जिम्मेदारियाँ और वे कृषि गतिविधियों में मदद कर रही हैं। इसलिए उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है लेकिन वे पूरी खुशी और रुचि के साथ केंद्र पर आ रही हैं।

भागीदारी और सहयोग : प्रतिभागियों के लिए रियायती सामग्री प्रदान करने के लिए स्थानीय कपड़ा आपूर्तिकर्ताओं के साथ साझेदारी बनाई प्रतिभागियों द्वारा सामना की जाने वाली परिवहन बाधाओं को दूर करने के लिए सामुदायिक संगठनों के साथ सहयोग किया।

निगरानी और मूल्यांकन :

1. गतिविधियों की निगरानी :-

- व्यावहारिक सिलाई असाइनमेंट और कौशल प्रदर्शनों के माध्यम से नियमित प्रगति मूल्यांकन किया गया।
- प्रशिक्षण प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए प्रतिभागियों से लगातार फीडबैक एकत्र किया गया।

2. मूल्यांकन परिणाम :-

- प्रारंभिक मूल्यांकन परिणाम प्रतिभागियों के सिलाई कौशल और आत्मविश्वास के स्तर में महत्वपूर्ण सुधार दर्शाते हैं।
- सुधार के लिए पहचाने गए क्षेत्रों में प्रशिक्षण संसाधनों तक पहुँच बढ़ाना और परिवहन चुनौतियों का समाधान करना शामिल है।

परिणाम और प्रभाव :

1. अल्पकालिक परिणाम :-

- प्रतिभागियों ने सिलाई तकनीकों और परिधानों में बढ़ी हुई दक्षता का प्रदर्शन निर्माण किया।
- प्रतिभागियों के बीच आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान में सुधार हुआ क्योंकि उन्होंने अपनी कृतियों का प्रदर्शन किया।

2. दीर्घकालिक प्रभाव :-

- प्रत्याशित दीर्घकालिक प्रभाव में कपड़ा उद्योग में प्रतिभागियों के लिए रोजगार और आय–सृजन के अवसरों में वृद्धि शामिल है।
- कौशल विकास और उद्यमिता के माध्यम से समुदाय के लिए सकारात्मक सामाजिक और आर्थिक लाभ।

भविष्य की योजनाएँ :

1. उन्नत सिलाई तकनीकों और विशेष परिधान निर्माण विधियों को कवर करने के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल की सीमा का विस्तार करें

2. प्रतिभागियों के लिए संसाधनों और सहायता सेवाओं तक पहुँच बढ़ाने के लिए स्थानीय व्यवसायों और संगठनों के साथ साझेदारी को मजबूत करें।

3. परिवहन चुनौतियों का समाधान करने और प्रतिभागियों के बीच अधिक भागीदारी और प्रतिधारण दर सुनिश्चित करने के लिए रणनीतियों को लागू करें।

निष्कर्ष : सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम में महत्वपूर्ण प्रगति देखी गई, जिसमें प्रतिभागियों ने अपने सिलाई कौशल और समग्र आत्मविश्वास में सराहनीय प्रगति की। चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, कार्यक्रम गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण और सहायता के माध्यम से व्यक्तियों को सशक्त बनाने के अपने मिशन के लिए प्रतिबद्ध है। निरंतर समर्पण और सहयोग के साथ, कार्यक्रम का लक्ष्य आगामी अधिक प्रभाव प्राप्त करना है।

कार्यक्रम अवलोकन –

इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं को उनकी आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ाने के लिए मूल्यवान सहायता प्रदान करना है। प्रतिभागियों को सिलाई तकनीक और व्यवसाय प्रबंधन में व्यापक प्रशिक्षण दिया जाता है

कार्यक्रम गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त विवरण –

कौशल विकास के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन जनवरी 2024 की 17 तारीख को किया जा रहा है। प्रत्येक केंद्र में 30 उत्साही प्रतिभागियों, कुल 60 महिलाओं को शामिल किया गया, जिन्होंने सिलाई सीखने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दृढ़ समर्पण दिखाया। इस महीने में सिलाई प्रशिक्षण प्रक्रिया जारी है। सभी 60 महिलाएं सर्वोत्तम सिलाई सीखने और अपना लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास कर रही हैं। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन उनकी इच्छा और साहस ने सिलाई गतिविधियों को सीखने में कोई कमी नहीं आने दी। दर्जी ऑनलाइन के सीईओ और जीएमवीएस सचिव ने सिलाई केंद्र का दौरा किया और महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने और उनकी आजीविका कमाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित किया। हम उन्हें बाजार से जोड़ना चाहते हैं, इसलिए महिलाओं को डॉक्टर एप्रन और बैग सिलाई का काम दिया

इस महीने के दौरान सभी प्रतिभागियों द्वारा सीखी गई विभिन्न सिलाई गतिविधियाँ –

❖ प्रतिभागियों को कपड़े के टुकड़ों को काटने, पिन लगाने और उन्हें एक साथ सिलने की प्रक्रिया के माध्यम से मार्गदर्शन करें ताकि स्कर्ट, टॉप या ड्रेस जैसे सरल वस्त्र बनाए जा सकें।

❖ व्यक्तिगत शरीर के आकार और माप के अनुसार वस्त्रों को फिट करने की तकनीकों पर चर्चा करें। प्रतिभागियों को सिखाएँ कि अपने वस्त्रों के फिट को समायोजित करने के लिए सरल परिवर्तन कैसे करें।

❖ महिलाओं द्वारा बैग काटना और सिलाई करना सीखा गया।

❖ प्रशिक्षक द्वारा महिलाओं को सिलाई उपकरणों के बारे में सभी जानकारी दी गई।

❖ प्रतिभागियों द्वारा विभिन्न कटिंग डिजाइन सीखे गए।

❖ महिलाओं द्वारा डॉक्टर एप्रन काटना और सिलाई करना सीखा गया।

❖ महिलाओं द्वारा बेबी फ्रॉक, ब्लाउज, स्कर्ट, शर्ट आदि के विभिन्न डिजाइन सीखे गए।

❖ प्रतिभागियों द्वारा बनाया गया डॉक्टर एप्रन।

❖ दर्जी ऑनलाइन द्वारा दिए गए पूर्ण ऑर्डर के लिए महिलाओं द्वारा बनाए गए बैग।

❖ हमने छह महिला स्वयं सहायता समूहों को बनाया और उन्हें मासिक बचत के बारे में जागरूक किया।

एक महत्वपूर्ण आकर्षण दर्जी ऑनलाइन के सीईओ और जीएमवीएस सचिव द्वारा सिलाई केंद्रों का दौरा था। उनकी उपस्थिति और प्रोत्साहन भरे शब्दों ने प्रतिभागियों का मनोबल बढ़ाया और उन्हें अपने नए कौशल के माध्यम से उत्कृष्टता और वित्तीय स्वतंत्रता के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित किया।

इस कार्यक्रम ने महिलाओं के आर्थिक माहौल में योगदान दिया है, जिससे उन्हें सिलाई के माध्यम से उत्पादन करने और अपना खुद का व्यवसाय स्थापित करने में सक्षम बनाया गया है।

अंत में, सिलाई प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के कार्यक्रम ने महिलाओं और सृजन में महत्वपूर्ण प्रगति की है। हम इस प्रभावशाली यात्रा को जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम–बूबानी, अजमेर
Hans Mobile Medical Services Program 2023-24

द् हंस फाउण्डेशन– नई दिल्ली के वित्तिय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा हंस मोबाइल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम के तहत श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन पंचायत समीति के 20 गाँवो में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जा रही है। जैसा कि यह सभी को ज्ञात है कि स्वास्थ्य सिर्फ बिमारियों की अनुपस्थिति ही नहीं बल्कि एक पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वस्थता है। इसलिये कहा गया है (पहला सुख निरोगी काया)। स्वस्थ व्यक्ति अपने रोजमर्रा की गतिविधियों से निपटने के लिए किसी भी परिवेश में अनुकूल परिस्थितियों से भी स्वयं को निकालने में सक्षम होते है। कहा भी गया है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। कोई आदमी तभी अपने जीवन का पूरा आनन्द उठा सकता है जब वह शारीरिक तथा मानसिक रुप से स्वस्थ रहे। अगर हम अपने शरीर का ध्यान रखेंगे, संतुलित आहार लेंगें तथा नियमित रूप से व्यायाम करेंगे तो ही स्वस्थ रहेंगें। स्वस्थ रहने के लिये नशे से मुक्ति आवश्यक है। स्वस्थ व्यक्ति ही आनंदमय जीवन व्यतीत कर सकता है।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर ने इन्हीं बातों को ध्यान मे रखते हुए स्वास्थ्य को मुख्य उद्देश्य के रुप मे चुना है। ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर के द्वारा समय–समय पर स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दो पर कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है और ज्यादा से ज्यादा लोगों को इन कार्यक्रमों से जोडकर लाभ पहुँचाया जाता है।

कार्यक्रम की शुरुआत :-

संस्थान द्वारा अजमेर जिले के दूर–दराज स्थित गाँवों मे स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं की एक रिर्पोट प्रोजेक्ट रुप में द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली, को सौंपी गई। द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली के मूल्यांकन के द्वारा 13 मई, 2014 को संस्थान द्वारा अजमेर जिले के श्रीनगर पंचायत समीति के 12 गाँवों में इस कार्यक्रम की शुरुआत की गयी । कार्यक्रम के द्वारा एक वित्तीय वर्ष में 12 गाँवो में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की गई हैं। शुरुआत में परियोजना का मूल्यांकन दांता गांव में था लेकिन उसके पश्चात् वर्तमान में बूबानी में स्थित है। जहाँ पर कार्यक्षेत्र से रेफर मरीजों का उपचार भी किया जाता है। यह परियोजना मई 2014 से वर्तमान तक लगातार जारी है और समय–समय पर कार्यक्षेत्र में बदलाव किया जाता है। नये गाँवो को कार्यक्षेत्र में जोडा जाता है और कम से कम 3 साल तक सेवायें प्रदान की जाती है। इन वर्षो में लक्ष्य की प्राप्ति कर नये गाँवो का चुनाव किया जाता है। इस वर्ष (2020 से 2022) तक संस्थान द्वारा अजमेर जिले के श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन पंचायत समीति में 20 गाँवों का चयन किया गया है, जिसमें वर्ष 2020 सें स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाए प्रदान की जा रही हैं।

संस्थान द्वारा हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज प्रोग्राम का संचालन मई 2014 से किया जा रहा है। कार्यक्रम के द्वारा एक वित्तीय वर्ष में 12 गांवों में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जाती है। इन वर्षो में टीम के द्वारा गुवारडी, शाला की ढाणी, कालेडी, आखरी, गुदली, हाथीपट्टा, मानपुरा, नारगाल, लीरी का बाडिया, टण्टिया, मोहनपुरा तथा सराणा आदि 12 गांवों में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की गयीं। माह मैं एक गॉव में दो बार स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस सफलता को देखते हुए इस कार्यक्रम को आगे बढाते हुए वर्ष 2020–21 से 2021–22 तक संस्था द्वारा 20 गाँवों में स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान की जा रही है। एक माह में दो बार तथा प्रत्येक दिन दो गांवों में स्वास्थ्य शिविरो का आयोजन किया जा रहा है। जिसके अर्न्तगत लाभान्वित होने वाले गांवों की सूची अधोलिखित है – खोडा गणेश, दांता, धामेडी, देवमन्द ढाणी, निम्बुकिया, टिढाणा, नौलखा, भवानीखेडा, मानपुरा, रामपुरा, मोहनपुरा, कानाखेडी, बडल्या, नेडल्या, बडी होकरा, छोटी होकरा, गोवलिया, झोपडा, नाडी का दढ्डा तथा बनियातो की ढाणी।

कार्यक्रम के तहत एक एम्बुलेंस है जो चिकित्सा से सम्बन्धित विभिन्न उपकरणों से युक्त है। यह एक छोटा चलता–फिरता अस्पताल है। टीम के द्वारा सुबह 9:00 से 4:00 बजे तक 20 गाँवों मे स्वास्थ्य शिविर लगाया जाता है। इसके बाद 4:00 से 5:00 बजे तक बुबानी (स्टेशनरी हेल्थ सेन्टर) पर मरीजों का उपचार किया जाता है। स्वास्थ्य शिविर मे पूरी टीम उपस्थित रहती है।

कार्यक्रम के उद्देश्य :-

1. परिवार में महिलाओं तथा बच्चों की स्वास्थ्य स्थिति में सुधार लाना।
2. परिवार व समाज में महिलाओं की स्वास्थ्य की महत्ता पर जोर देना।
3. महिलाओं तथा बच्चों को स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवायें उपलब्ध करवाना।
4. प्रत्येक गर्भवती व धात्री महिला तक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाओं की पहुँच बनाना।
5. महिलाओं को प्रसव पूर्व सुरक्षित प्रसव तथा प्रसव पश्चात् देखभाल को समझाकर स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करना।
6. महिलाओं को संस्थागत प्रसवों के लिए प्रेरित करना तथा उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे– 104 व 108 सेवाओं, जननी मातृ व शिशु योजना, मुख्यमंत्री राजश्री योजना के लाभों की जानकारी देना।
7. नियमित जाँच, देखभाल, उपचार, संतुलित आहार, टीकाकरण तथा संस्थागत प्रसव आदि के द्वारा मातृ मृत्युदर व शिशु मृत्युदर को कम करना।
8. समुदाय को बालिका बचाने हेतु जागरुक करना।
9. वंचित वर्ग तक स्वास्थ्य व चिकित्सा सुविधाओं को पहुँचाना।
10. पर्यावरण प्रदूषण को कम करने पर जोर देना तथा स्वास्थ्य मे सकारात्मक बदलाव हेतु बनाना।
11. जागरुकता बैठकों का आयोजन कर विभिन्न स्वास्थ्य सम्बंधित मुद्दों जैसे– स्वच्छता, पोषाहार, मानसिक स्वास्थ्य परामर्श, आँखों की देखभाल, स्वच्छ वातावरण, मादक द्रव्यों के सेवन को कम करने हेतु परामर्श तथा विभिन्न बिमारियों जैसे– डेंगु, चिकनगुनिया, मलेरिया, अस्थमा, कैंसर, कुपोषण, मोटापा, एच.आई.वी./एड्स, एनीमिया, कमजोरी आदि के प्रति जागरुकता लाना।
12. विभिन्न बिमारियों की जाँच व उपचार के साथ–साथ ग्रामवासियों को बिमारियों के कारण, लक्षण, उपचार व रोकथाम के प्रति जागरुक करना।
13. स्वास्थ्य आवश्यकताओं तथा उनके हक के प्रति जागरुक कर उचित कदम उठाने के लिए प्रेरित करना।
14. बालिका जीवितता एवं सुरक्षित मातृत्व से जुडे मुद्दे पोशाहार एवं स्वास्थ्य के बारे मे महिला, परिवार तथा समाज मे जागरुकता को बढावा देना।
15. विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी बैठकों के माध्यम से समय–समय पर देना तथा योजनाओं से उचित लाभार्थियों को जोडकर लाभ पहुँचाना।
16. महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने हेतु जागरुक करना।
17. बेटी बचाओ बेटी पढाओ के लिए ग्रामीण समुदाय के लोगो को प्रेरित करना।
18. जनसंख्या नियंत्रण व स्वास्थ्य की दृष्टि से महिलाओं को बच्चों के बीच कम से कम तीन से पाँच वर्ष का अंतर रखने के लिए प्रेरित करना।
19. ग्रामीणों को केरोना के बारे में बताना जैसे कि इसके क्या लक्षण हैं, इसके बचाव के उपाय व कैसे इस बीमारी के रहते अपना ध्यान रखा जाना चाहिए।

कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य शिविर में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाएँ -

कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य शिविर मे विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाएँ जैसे – चिकित्सा जाँच, दवाइयाँ, काउन्सिलिंग, गर्भवती महिला, स्वास्थ्य जाँच, महिला तथा शिशु स्वास्थ्य जाँच, देखभाल व घर भ्रमण कर मरीजों का स्वास्थ्य जाँच, रेफर आदि के अलावा स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दो पर जागरुकता बैठको का आयोजन किया जाता है। टीम के द्वारा महिलाओं, किशोर–किशोरी, बालक–बालिकाओं तथा कार्यक्रम के तहत निर्मित ग्राम स्वास्थ्य कमेटी के सदस्यों के साथ जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता है। कार्यक्रम के तहत 20 गाँवों में 1–1 स्वास्थ्य कार्यकर्ता को नियुक्त किया गया है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता के द्वारा गांव में भ्रमण किया जाता है। जिसमें उसके कई कार्य होते है। जैसे – गर्भवती तथा धात्री महिला की नियमित देखभाल, टीकाकरण, बच्चों का टीकाकरण, पोशाहार, मरीजों का फोलोअप, टीकाकरण दिवस पर गाँव की आंगनबाडी पर पँहुच तथा टीकाकरण मे सहयोग, गाँव में स्वास्थ्य सम्बन्धित मुद्दों पर चर्चा एवं जागरुकता, परिवार नियोजन के साधनों के प्रति जागरुकता तथा उपयोग पर जोर, मरीजों की रेफर समस्याओं पर चर्चा तथा निवारण विभिन्न बिमारियों की जानकारी, सरकारी योजनाओं की जानकारी देना तथा निवारण, विभिन्न बिमारियों की जानकारी, सरकारी योजनाओं की जानकारी देना तथा सरकारी योजनाओं से जोडकर लाभ पहुँचाना आदि।

स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा समय–समय पर घर भ्रमण कर स्वास्थ्य के बारे में उचित जानकारी प्रदान की जाती है। महिलाओं को

उचित मार्गदर्शन भी प्रदान किया जाता है तथा महिलाओं की समय–समय पर घर भ्रमण कर देखभाल की जाती है। कार्यक्रम के बेहतर कार्यान्वन तथा उद्देश्य की सफलतापूर्वक प्राप्ति हेतु प्रत्येक गांव में गांव स्तर पर एक ग्राम स्वास्थ्य कमेटी का गठन किया गया है। गाँव के महिला व पुरुष ही इस कमेटी के सदस्य हैं। गाँव स्तर की समस्याओं पर चर्चा तथा निवारण करने हेतु प्रत्येक माह में एक बार जागरुकता बैठक का आयोजन किया जाता है तथा नवीनतम जानकारी प्रदान की जाती है।

रणनीतियाँ :-

- ❖ कार्यक्रम की शुरूआत में गांवों के प्रत्येक घर का सर्वे किया तथा कार्यक्रम की जानकारी दी गयी।
- ❖ स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा गाँव में घर घर जाकर हंस की गाडी के आने की दिनाँक व समय के विषय में सूचना दी।
- ❖ एम्बुलेंस का टीम सहित गांव में समय पर पहुँचकर स्वास्थ्य शिविर आयोजित करना।
- ❖ धात्री महिलाओं को उनके घर जाकर विजिट कर फॉलोअप करना तथा स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर चर्चा करना।
- ❖ स्वास्थ्य शिविर पर आये मरीजों का उचित उपचार तथा आवश्यक सलाह देना।
- ❖ महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को एक स्थान पर एकत्रित कर जागरूकता बैठकों का आयोजन करना।
- ❖ गांव के उच्च माध्यमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं का एक समूह बनाकर जागरूकता रैली तथा बैठक आयोजित करना।
- ❖ गांव स्तर पर निर्मित ग्राम स्वास्थ्य कमेटी के सदस्यों के साथ जागरूकता बैठकों का आयोजन करना।
- ❖ जागरूकता बैठकों में विभिन्न मुद्दें जैसे स्वास्थ्य संबंधी मुद्दें, स्वच्छ आदतें, टीकाकरण, विटामिन ए, पोशाहार, स्वच्छता, शारीरिक देखभाल, आँखों की देखभाल, मानसिक स्वास्थ्य, सबस्टेज एब्यूज, संस्थागत प्रसव, प्रसव पूर्व, सुरक्षित प्रसव, प्रसव बाद देखभाल, विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी तथा सामाजिक कुरीतियों जैसेः– दहेज प्रथा, बाल विवाह, शराब, नशाखोरी, अंधविश्वास, भेदभाव आदि पर जागरूकता व काउसेलिंग सेवायें प्रदान करना।
- ❖ प्रत्येक माह एक अर्न्तराष्ट्रीय या राष्ट्रीय दिवसों का आयोजन करना।
- ❖ गम्भीर गर्भवती महिलाओं को चिन्हित करना एवं बच्चों तथा महिलाओं को नजदीकी अस्पताल पी.एच.सी. या सी.एच.सी. या सब–सेन्टर पर रेफर करना।
- ❖ स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा गांव मे होम विजीट कर मरीजों का फॉलोअप करना तथा कार्यक्रम के डॉक्टर के साथ सम्पर्क कर उचित सलाह देना।
- ❖ परियोजना अधिकारी द्वारा स्वास्थ्य कार्यकर्ता के साथ गांव मे भ्रमण करना तथा गर्भवती, धात्री महिलाओं तथा गांववासियों से वार्तालाप कर कार्यक्रम की समीक्षा करना तथा मॉनिटरिंग व मूल्यांकन करना तथा टीम को सहयोग प्रदान करना।
- ❖ टीकाकरण के दिन आंगनबांडी केन्द्र पर जाना तथा गांव की गर्भवतियों तथा महिलाओं को टीकाकरण के प्रति जागरूक कर टीकाकरण मे सहयोग करना।

गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ :-

निःशुल्क स्वास्थ्य सेवायें:- कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधायें अजमेर जिले की श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन पंचायत समिति के 20 गाँवो में प्रदान की जा रही है। कार्यक्रम के तहत मुख्य ध्यान महिलाओं तथा बच्चों पर केन्द्रित किया जाता है। प्रत्येक गाँव में एक स्वास्थ्य कार्यकर्ता नियुक्त किया गया है जो टीम के गांव में पहुँचने से पहले ही सूचना कर देता है। टीम गाँव में पहुँचकर निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन करती है। इसके साथ ही जागरुकता बैठकों का आयोजन भी किया जाता है। एम्बुलेंस टीम के साथ गाँव मे पहुँचकर हॉर्न बजाती है जिससे ग्रामवासियों को सूचना मिल जाती है। स्वास्थ्य टीम द्वारा गृह भ्रमण कर धात्री महिलाओं तथा नवजात शिशु की स्वास्थ्य जाँच, देखभाल, स्तनपान का तरीका व टीकाकरण हेतु प्रेरित, टाँको की देखभाल, जन्म प्रमाणपत्र, स्वच्छता, उपचार आदि सेवायें प्रदान की जाती है। परियोजना के तहत इस वर्ष 24448 मरिजों को निःशुल्क स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवायें प्रदान की गई।

वर्ष	महिला	पुरुष	बच्चे	कुल
2014–15	9148	5789	2443	17380
2015–16	12563	1817	4182	18562
2016–17	11543	2119	3853	17575
2017–18	11879	1259	3593	16736
2018–19	11823	1338	3681	16842
2019–20	10912	3144	1793	15849
2020–21	15884	1495	5146	22525
2021–22	17412	1579	5457	24448
2022–23	18411	1680	5500	25591
2023–24	18900	1690	5980	26570
कुल	**101164**	**18600**	**30153**	**149917**

स्वास्थ्य शिविर में महिलाओं और बच्चों से सम्बन्धित सभी प्रकार की बिमारियों का उपचार किया जाता है। कई बार उपचार से आराम नहीं मिलने पर या गंभीर परिस्थितियाँ होने पर जाँच हेतु मरिजों को किशनगढ, श्रीनगर तथा अजमेर के अस्पतालों में रेफर भी किया जाता है।

कार्यक्रम का स्टेशनरी हेल्थ सेन्टर–बूबानी में स्थित है जहाँ से कार्यक्रम का संचालन किया जाता है। बूबानी से प्रातः 9:00 बजे एम्बुलेंस गाँव में स्वास्थ्य शिविर लगाने के लिये रवाना होती है। 09:00 बजे से शाम 4:00 बजे तक गाँवों में स्वास्थ्य शिविर लगाया जाता है। शाम 4:00 बजे तक बूबानी में स्वास्थ्य टीम पहुँचती है और 5:00 बजे तक स्टेशनरी हेल्थ सेन्टर, बूबानी पर स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जाती है।

टीम के द्वारा प्रत्येक मरीज का पूरा रिकॉर्ड ओ.पी.डी. रजिस्टर में रखा जाता हैं उसी रिकॉर्ड के आधार पर मासिक रिर्पोट बनाई जाती है। उनकी प्रत्येक विजिट में वजन, बी.पी. जाँच, सोनोग्राफी आदि की जाँच की जाती है। प्रत्येक विजिट में संस्थागत प्रसव के लिए प्रेरित किया जाता है। 104 व 108 की सुविधाओं की सम्पूर्ण जानकारी दी जाती है। बच्चा होने पर टीम द्वारा धात्री महिला के घर जाकर पीएनसी विजिट की जाती है। महिला को स्वयं तथा अपने बच्चे की देखभाल प्रक्रिया तथा सावधानियों के प्रति जागरुक किया जाता है। बच्चे को नहलाना, मालिश करना, स्तनपान से लेकर सम्पूर्ण टीकाकरण करवाने लगवाने के लिये प्रेरित किया जाता है। माँ को स्वयं के आहार के प्रति जागरुक भी किया जाता है।

परियोजना के स्वास्थ्य शिविर में डॉक्टर द्वारा मरिजों की स्वास्थ्य जाँच कर उपचार लिखा जाता है। मेल तथा फिमेल नर्स द्वारा दवा दी जाती है और दवा खाने का तरीका भी बताया जाता है। मरिजों की बीमारी के अनुसार ही दवा दी जाती है और उपचार चलाने के लिए जागरुक किया जाता है। मरिजों को 3–15 दिन का उपचार दिया जाता है। बी.पी. अस्थमा, जैसी बिमारियों का ईलाज लगातार चलता है। उन्हें 15 दिन का उपचार दिया जाता है। परियोजना टीम द्वारा लगातार गाँव में भ्रमण कर ग्रामवासियों से सम्पर्क किया जाता है। गाँव में महिलायें गर्भवती होने पर टीम के पास जाँच हेतु आती है और पॉजीटिव होने पर लगातार उपचार दिलवाया जाता है। उनके वजन, बी.पी. दैनिक दिनचर्या, कामकाज, खून की जाँच, दिन के समय आराम, टीकाकरण, सोनोग्राफी, स्वयं की पहचान सम्बन्धित दस्तावेजो का कार्य पूर्ण तथा आंगनबाडी केन्द्र पर लगातार सम्पर्क आदि की पूर्ण जानकारी दी जाती है तथा टीम द्वारा रिकॉर्ड भी रखा जाता है। गर्भवती महिलायें स्वास्थ्य शिविर में पहुँचकर नियमित जाँचों का मूल्यांकन तथा दवाइयाँ प्राप्त करती है। इसके साथ सरकारी संस्थानों पर लगातार सम्पर्क बनाये रखने के लिए प्रेरित भी किया जाता है। गर्भवती महिलायें

पूर्ण गर्भावस्था के दौरान टीम से जुडी रहती है और उपचार प्राप्त करती है।

गर्भवती एवं धात्री महिला जाँच :- कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को स्वास्थ्य सुविधायें प्रदान करना है। विशेषतः प्रत्येक गर्भवती महिला को स्वास्थ्य लाभ पहुँचाना है। हमारा लक्ष्य मातृ मृत्युदर को कम करना है इसलिये टीम गर्भवती तथा धात्री महिलाओं पर विशेष ध्यान केन्द्रित करती है। टीम वर्तमान के श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन क्षेत्र के 20 गाँवों में कार्य कर रही है। प्रत्येक गाँववासी को कार्यक्रम की सुविधाओं की जानकारी है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता की भी गाँव में अच्छी पहचान बन चुकी है। गाँव में अगर किसी महिला को कोई तकलीफ होती है तो वह स्वास्थ्य कार्यकर्ता से तुरंत सम्पर्क करती है। महिला को गर्भ से होने का अंदेषा होने पर स्वास्थ्य टीम या आंगनबाडी केन्द्र पर जाँच करवाकर पुष्टि कर लेती है। गर्भवती महिला के प्रथम बार स्वास्थ्य शिविर में पहुँचने पर उसका रजिस्ट्रेशन किया जाता है उसके बाद लगातार शिविर में पहुँचकर स्वास्थ्य जाँच करवाने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसके साथ ही स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा स्वास्थ्य शिविर के बाद लगातार गृह भ्रमण कर स्वास्थ्य स्थिति की जानकारी प्राप्त की जाती है। इसके साथ उनकी काउंसिलिंग की जाती है, जिसमें पोशाहार, स्वच्छता, दैनिक दिनचर्या, आराम, जननी सुरक्षा योजना तथा खून की जाँच आदि के लिए प्रेरित किया जाता है और उनसे संस्थागत प्रसव, टीकाकरण माँ का पहला दूध आदि बिन्दुओं पर भी चर्चा की जाती है। परियोजना के द्वारा इस वर्ष में 422 गर्भवती महिलाओं का पंजीकरण कर स्वास्थ्य सुविधायें प्रदान की गयी। इन पंजीकृत गर्भवती महिलाओं को बच्चा होने तक स्वास्थ्य जाँच एवं उपचार की सुविधा प्रदान की गयी। टीम द्वारा इन 422 पंजीकृत गर्भवती महिलाओं को 3336 बार स्वास्थ्य जाँच एवं उपचार दिया गया। प्रत्येक विजीट पर उन्हें लगातार वजन बढाने, पोशाहार, स्वच्छता, आराम, संस्थागत प्रसव तथा माँ का पहला दूध पिलाने के लिए जागरुक किया जाता है। साथ ही बेटा–बेटी मे अंतर न करके बेटी को भी समान अवसर प्रदान करने के लिए प्रेरित किया जाता है। बेटी को भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देना चाहिये। उसे ही बेटा समझना चाहिए। प्रसव होने पर टीम द्वारा महिला के घर मातृ एवं शिशु देखभाल हेतु भ्रमण किया जाता है। बच्चे एवं माँ को बच्चे के सम्पूर्ण टीकाकरण, स्तनपान, स्वच्छता, पोशाहार, जन्म प्रमाण पत्र के साथ विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जाती है। इस वर्ष में टीम द्वारा 311 धात्री महिलाओं का उपचार, परामर्श एवं स्वास्थ्य देखभाल की गयी।

टीकाकरण:- स्वास्थ्य टीम गाँव में स्वास्थ्य सेवायें तथा चिकित्सा सेवायें प्रदान करती है। सम्पूर्ण टीकाकरण बच्चों के बेहतर तथा सुरक्षित भविष्य के लिये आवश्यक है। यह टीकाकरण बच्चों को सात बिमारियाँ जैसे – क्षय रोग, डिप्थीरिया, काली खाँसी, खसरा, टिटनेस, हेपेटाईटिस बी तथा चिकन पॉक्स आदि से बचाते है। इसके साथ ही बच्चो को पोलियो की दवा भी पिलाई जाती है। आंगनबाडी केन्द्र पर कार्यरत आशा सहयोगिनी तथा टीम का स्वास्थ्य कार्यकर्ता टीकाकरण से पूर्व गाँववासियों को सूचना प्रदान करता है। टीकाकरण के दिन आंगनबाडी केन्द्र पर टीकाकरण में सहयोग किया जाता है। टीकाकरण के दिन गर्भवती महिलाओं तथा बच्चों को टीके लगाये जाते है। जिसका रिकॉर्ड स्वास्थ्य कार्यकर्ता तथा आंगनबाडी कार्यकर्ता द्वारा रखा जाता है। इस वर्ष में 20 गाँवों में टीम के सहयोग से आंगनबाडी केन्द्रों पर टीकाकरण किया गया। जिसकी रिर्पोट है – 215 बी.सी.जी., 283 पेन्टा प्रथम, 297 पेन्टा द्वित्तीय, 342 पेन्टा त्तीय, 342 आईपीवी, 318 खसरा, 181 डीपीटी बुस्टर प्रथम, 12 डीपीटी बुस्टर द्वित्तीय तथा गर्भवती को 408 टीटी लगाये गये। टीम द्वारा प्रत्येक गाँव से प्रत्येक माह में रिकॉर्ड प्राप्त किये जाते है और मासिक रिकॉर्ड में दर्ज कर संस्थान तथा टी.एच.एफ. को प्रदान किये जाते है।

टीम द्वारा उन महिलाओं के घर भ्रमण कर टीकाकरण के लिए प्रेरित किया जाता है जो टीके नहीं लगवाते हैं, उन्हें टीकाकरण हेतु प्रेरित कर टीकाकरण करवाया जाता है। टीम द्वारा नवम्बर माह में विश्व टीकाकरण दिवस भी मनाया जाता है। इस दिवस पर जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता है। इन बैठकों के माध्यम से ग्रामवासियों को सम्पूर्ण टीकाकरण करवाने हेतु काउन्सलिंग की जाती है। टीम के सहयोग से इस वर्ष मे कुल 2398 बच्चों का टीकाकरण करवाया गया। बच्चो तथा गर्भवती महिलाओ के टीकाकरण के साथ–साथ कोरोना का टीका लगवाने के लिए भी गाँववासियों को प्रेरित किया जाता है। उनकी भ्रान्तियों को दूर कर उन्हें टीकाकरण करवाने के लिए जागरुक किया जाता है।

मातृ मृत्युदर एवं शिशु मृत्युदर :- कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गर्भवती महिलाओं को जागरुक कर नियमित जाँच तथा उपचार के माध्यम से संस्थागत प्रसव के फायदे बताना है। कार्यक्रम के विभिन्न आयाम हैं जिसका उद्देश्य ग्रामवासियों को उनके उद्देश्य के प्रति जागरुक करना है। विशेषतः महिला स्वास्थ्य का मुद्दा है। टीम द्वारा जागरुकता बैठकों के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। महिलाओं को वर्तमान के परिपेक्ष में छोटा परिवार–सुखी परिवार के लिए प्रेरित किया जाता है। गर्भावस्था के दौरान पोशाहार, दैनिक दिनचर्या, दिन के समय आराम, नियमित जाँच, वजन, बी.पी., खून की जाँच, टीकाकरण, सोनोग्राफी के साथ–साथ लगातार उपचार की सलाह दी गयी ताकि मातृ मृत्युदर को कम किया जा सके। शिशु मृत्युदर को कम करने के लिए जागरुकता बैठकों में स्तनपान का तरीका, स्वच्छता, माँ का पहला दूध आदि के प्रति गर्भावस्था में जागरुक किया जाता है तथा उसके बाद पी.एन.सी. विजीट पर भी प्रेरित किया जाता है ताकि शिशु मृत्युदर को कम किया जा सके। टीम द्वारा 20 गाँवों मे

स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाता है। वर्षभर में कार्यक्षेत्र के 20 गाँवों में एक भी मातृ मृत्यु नही हुई। वर्ष भर में 311 बच्चों का जन्म हुआ जिसमें से 8 बच्चों की मृत्यु हुई है। जो पिछले वर्ष की मृत्युदर से काफी कम है। टीम द्वारा समय–समय पर विभिन्न मुद्दों पर जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता है।

संस्थागत प्रसव :– कार्यक्रम का उद्देश्य ही गर्भवती महिलाओं का नियमित उपचार कर संस्थागत प्रसव करवाना है। जागरुकता बैठकों के आयोजन के द्वारा महिलाओं को संस्थागत प्रसव, जननी सुरक्षा योजना, 104 व 108 की सुविधाओं आदि के साथ–साथ माँ व बच्चे की सुरक्षा तथा उपयोगिता के प्रति सचेत किया। स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा सरकारी अस्पताल में प्रसव करवाने के बाद मिलने वाले लाभ की जानकारी गृह परिवारों को दी गयी। महिला के साथ–साथ उनके परिवारों को भी संस्थागत प्रसव हेतु प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम के द्वारा 20 गांवों में इस वर्ष 274 प्रसव सरकारी अस्पताल में, 31 प्रसव निजी अस्पताल मे तथा 6 प्रसव घर पर हुये। इस वर्ष भर में कुल 311 प्रसव हुये।

जागरुकता :– कार्यक्रम में स्वास्थ्य शिविर तथा जागरुकता बैठकों का नियमित रुप से आयोजन किया जाता है। टीम के द्वारा महिलाओं, किशोर–किशोरी, बालक–बालिकाओं तथा ग्राम स्वास्थ्य कमेटी के सदस्यों के साथ जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता है। इन जागरुकता बैठकों में स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों तथा बिमारियों पर चर्चा की जाती है और जागरुक किया जाता है। इसके साथ ही माह में एक बार एक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दिवस भी मनाया जाता है। इस तरह वर्ष भर में 18 राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दिवसों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष टीम द्वारा महिलाओं की 20 जागरुकता बैठकों का आयोजन किया गया। जिसमे 4688 महिलाओं को जागरुक किया गया। किशोर–किशोरी के साथ 16 जागरुकता बैठकों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के पिछले वर्ष तक किशोरी जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता था लेकिन इस वर्ष से किशोर–किशोरी जागरुकता बैठकों का आयोजन किया गया। इन जागरुकता बैठकों मे किशोर–किशोरी के स्वास्थ्य स्थिति, शारीरिक बदलाव, देखभाल व सावधानियाँ आदि पर भी चर्चा की गयी तथा छेडछाड के प्रति सचेत किया गया। कार्यक्रम में ग्रामवासियों का उच्चतर सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रत्येक गाँव में ग्राम स्तर पर एक ग्राम स्वास्थ्य कमेटी का गठन किया गया है। इनके साथ भी माह मे एक बार जागरुकता बैठक का आयोजन कर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। ग्राम स्वास्थ्य कमेटी की 20 जागरुकता बैठकों के द्वारा 2693 सदस्यों को जागरुक किया गया। समय–समय पर जागरुकता बैठकों के साथ–साथ रैलियों का आयोजन भी किया जाता है।

परिवार नियोजन :– कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं के अलावा जागरुकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन जागरुकता कार्यक्रमों में स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। टीम के द्वारा परिवार नियोजन की भी जागरुकता बैठकों में चर्चा की जाती है। महिलाओं तथा उनके परिवार को छोटे परिवार का महत्व समझाया जाता है। आजकल के महंगाई के जमाने में बच्चों को उच्चतर शिक्षा, सक्षम बनाना तथा सशक्त करना बहुत मुश्किल है। बिना किसी कामयाबी के आने वाले समय में जीवन जीना और भी मुश्किल हो जायेगा। जमीने कम पड जायेगी। खाने–पीने की चीजें कम पडेगी। इन बिन्दुओं पर चर्चा कर परिवार नियोजन के साधन जैसे– कण्डोम, गर्भ निरोधक गोलियाँ, महिला नसबंदी, पुरुष नसबंदी, कोपरटी, इंजेक्शन, इत्यादि की विस्तृत जानकारी दी गई तथा उपयोग में लेने के लिए प्रेरित किया गया।

टीम के द्वारा स्वयं परिवार नियोजन के साधनों को महिलाओं को नहीं दिया जाता है बल्कि स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा महिलाओं को प्रोत्साहित कर आंगनबाडी केन्द्र तक पहुँचाने और वहाँ पर आशा सहयोगिनी की देखरेख में महिलाओं को उचित साधन दिया जाता है तथा जागरुक भी किया जाता है। इसके साथ ही नसबंदी के लिए भी प्रेरित किया जाता है। टीम के द्वारा आशा सहयोगिनी के सहयोग से 53 महिला नसबंदी करवाई गई। 27 महिलाओं ने कॉपरटी रखवायी। 2314 महिलाओं ने कंडोम किया। 418 महिलाओं ने गर्भ निरोधक गोलियाँ तथा 57 महिलाओं ने सरकार द्वारा संचालित अंतरा इंजेक्शन लगवाये। इस प्रकार 2869 परिवार नियोजन साधनों का उपयोग इस वर्ष में किया गया।

रेफरल सेवायें :– कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य शिविर में स्वास्थ्य सेवाएँ निःशुल्क प्रदान की जाती है। स्वास्थ्य शिविर में सामान्यतः बिमारियों का ईलाज किया जाता है। कई बार स्वास्थ्य सेवाओं का फायदा न होने पर, गंभीर समस्या होने पर तथा लैब जाँच हेतु मरिजों को सरकारी व गैर सरकारी अस्पतालों में रेफर किया जाता है।

जाँच करवाकर पुनः स्वास्थ्य शिविर में चेकअप हेतु आने के लिए प्रेरित किया जाता है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा घर भ्रमण कर स्वास्थ्य जानकारी प्राप्त की जाती है। इस वर्ष टीम के द्वारा 194 मरिजों को रेफरल सुविधायें प्रदान की गई। आस–पास के कार्यक्षेत्र में गर्भवती महिला की स्वास्थ्य स्थिति अचानक खराब होने पर उसे इस एम्बुलेंस के द्वारा सरकारी अस्पताल में भी पहुँचाया जाता है।

स्वास्थ्य सेवाऐं

गर्भवती व धात्री महिला जाँच | मातृ मृत्युदर को कम करना | शिशु मृत्युदर को कम करना | सम्पूर्ण टीकाकरण

संस्थागत प्रसव के लिए प्रेरित करना | परिवार नियोजन को बढ़ावा देना | जागरूकता फेलाना

टी.एच.एफ. विजीट :- कार्यक्रम का संचालन द् हंस फाउण्डेशन नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर के द्वारा किया जा रहा है। कार्यक्रम का संचालन अजमेर जिले की श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन पंचायत समिति के 20 गांवों में किया जा रहा है। हर वर्ष द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली के द्वारा कार्यक्रम की गतिविधियों का मूल्यांकन किया जाता है। परन्तु कोरोना महामारी के कारण इस वर्ष विजीटकर्ता द्वारा टी.एच.एफ. विजीट ऑन लाइन ही की गई। परियोजना निदेशक शंकरसिंह रावत और परियोजना समन्वयक प्रीति ईनाणी द्वारा संस्थान की गतिविधियों व कार्यक्रम की सम्पूर्ण गतिविधियों की विस्तृत जानकारी ऑन लाइन प्रदान की गयी और कार्यक्रम संचालन की रूप रेखा को समझाया गया।

केस स्टडी

पृष्ठ भूमि– सुमन देवी ग्राम रामपुरा अहिरान की रहने वाली है। उसके पति का नाम भँवर लाल है। उसकी जाति यादव व आयु 40 वर्ष है। दो साल पहले उसके पति की मृत्यु हो गई। सुमन देवी अपने सास–ससुर व तीन बच्चो के साथ रहती है। सुमन देवी की सांस और सुमन दोनो नरेगा मे मजदूरी करती है। सुमन के परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नही है। इसके अलावा वो खेती व पशुपालन का कार्य भी करती है। उसके तीनों बच्चे गाँव के सरकारी स्कूल में पढ़ने जाते हैं। पति की मृत्यू के बाद घर व बच्चों की सारी जिम्मेदारी उसी के ऊपर आ गई। जिसके कारण वह अपने स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रख पाती है। सुमन देवी ने जब सुना कि उनके गाँव में हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जा रहा है तो सुमन देवी गाँव में आयोजित स्वास्थ्य शिविर में गई और वहाँ जाकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया तथा अपने आसपास के लोगों को भी स्वास्थ्य शिविर की सूचना देती है।

सुमन देवी अपने बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहती है। वह अपने घर की सफाई का पूरा ध्यान रखती है और सभी को स्वच्छता रखने के लिए प्रेरित करती है। वह अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन जी रही है पर कुछ समय से वह एलर्जी की बीमारी से पीडित है।

स्वास्थ्य कार्यकर्ता से भेट– स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने गाँव रामपुरा में गृह भ्रमण करने के दौरान सभी परिवारों से सम्पर्क किया व स्वास्थ्य जानकारी ली। उसी दौरान सुमन देवी के घर का भी भ्रमण किया तब सुमन देवी ने स्वास्थ्य कार्यकर्ता से बात की और बताया की मेरे एलर्जी की शिकायत है और बहुत ज्यादा है। खुजली के कारण शरीर में जलन और लाल निशान हो जाते हैं। यह समस्या पहले भी थी लेकिन एक महिने से तो काफी परेशान हूँ। स्वास्थ्यकार्यकर्ता ने कहाँ आपने किसी को दिखाया या बताया है क्या तब सुमन देवी ने बताया कि मैंने मेडिकल से दवाई ली थी लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने कहा आपके गाँव में हमारी संस्था के द्वारा स्वास्थ्य शिविर लगाया जाएगा तब उसमें डॉक्टर को दिखाना वे अच्छी तरह चेक करके दवाइयाँ देंगे और 1–2 कोर्स में आप बिल्कुल ठीक हो जाओगी। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने उन्हें शिविर की दिनांक बतायी व आने के लिए प्रेरित किया। सुमन देवी ने कहा मैं शिविर में जरुर आऊंगी डॉक्टर को आप बता देना।

परामर्श/उपचार – स्वास्थ्य कार्यकर्ता के बताये अनुसार सुमन देवी स्वास्थ्य शिविर में पहुँची। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने डॉक्टर को सुमन देवी की परेशानी बताई। डॉक्टर ने सुमन देवी से स्वास्थ्य जानकारी ली और 15 दिन की दवाइयाँ लिखकर उन्हें बराबर उपचार लेने को कहा। सुमन देवी ने दवाइयाँ नर्स कंचन पारीक से ली और लेने का

तरीका पता किया और अगले शिविर मे आने की कह कर चली गयी।

स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा फोलोअप – सुमन देवी ने घर जाकर डॉक्टर के बताये अनुसार दवाइयाँ ली 5 दिन दवाइयाँ लेने से सुमन देवी को कुछ फायदा हुआ। पाँच दिन बाद स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने सुमन देवी से सम्पर्क किया व स्वास्थ्य जानकारी ली। सुमन देवी ने कहा दवाइयाँ लेने के बाद मुझे कुछ फायदा लग रहा है। खुजली भी बहुत कम होती है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने सुमन देवी को 15 दिन का पूरा कोर्स करने को कहा तथा 15 दिन बाद पुनः डॉक्टर को दिखाने के लिए कहा। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने कहा कि इस बिमारी का ईलाज लम्बा चलता है इसलिए दवा नियमित रुप से लें और साफ–सफाई का ध्यान रखे। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने कोरोना बिमारी के लिए सचेत करते हुए कहा कि साफ–सफाई का विशेष रुप से ध्यान रखें। हाथों को बार–बार साबुन से धोंए। अपनी आँख, नाक व मुँह को छूने से बचे। बच्चों को घर में ही रखें तथा स्वयं भी बिना जरुरी काम के बाहर न जाएँ।

स्वास्थ्य शिविर– गांव रामपुरा में 15 दिन बाद जब पुनः स्वास्थ्य शिविर लगा तब सुमन देवी दिखाने आयी। डॉक्टर के द्वारा उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली गई। सुमन देवी ने कहा पहले से काफी फायदा है लेकिन अभी भी कभी–कभी खुजली होती है। थकान महसूस होती है, कुछ भी काम करने की इच्छा नही होती है। डॉक्टर ने कहा पहले इस बिमारी को ठीक होने दो बाद मे आपको ताकत की दवा देंगें जिससे आप स्वस्थ हो जाओगी। डॉक्टर ने उन्हें पुनः 15 दिन की दवाइयाँ दी और पुनः दिखाने को कहा। सुमन देवी ने घर जाकर नियमित रुप से दवाइयाँ ली जिससे उन्हें फायदा हो गया। अब उन्हें एलर्जी की शिकायत ना के बराबर है।

स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा विजिट– स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने गाँव में मरीजों से सम्पर्क किया उसी दौरान वे सुमन देवी के घर भी गये और उनकी स्वास्थ्य जानकारी ली। सुमन देवी ने कहा अब मैं ठीक हूँ और एलर्जी की शिकायत बिल्कुल नहीं है लेकिन कमजोरी बहुत ज्यादा है। चक्कर आते है और शरीर मे कंपकंपी रहती है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने अगले शिविर की जानकारी देते हुए पुनः स्वास्थ्य शिविर मे आने को कहा। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने कहा कि इस बिमारी के ठीक होने के बाद ही ताकत की दवा देते है। जब ही फायदा होता है।

निष्कर्ष– सुमन देवी को एलर्जी की बिमारी से राहत मिली वह अब बिल्कुल ठीक है। सुमन देवी अगले स्वास्थ्य शिविर मे आई और डॉक्टर से कहा आपको बहुत–बहुत धन्यवाद मेरा ईलाज घर पर ही कर दिया। ईलाज में न तो पैसा लगा न ही समय। अब डॉक्टर ने सुमन देवी को पाँच दिन की कमजोरी की दवाइयाँ दी। सुमन देवी ने नियमित रुप से पाँच दिन की दवाइयाँ ली और ठीक हो गई। वह अब अपने आप को स्वस्थ महसूस करने लगी। अब वह घर का काम आसानी से कर लेती है। शरीर मे कंपकंपी भी ठीक हो गई। सुमन देवी व उसके परिवार ने पूरी टीम का धन्यवाद दिया कि आपकी वजह से मैं पूरी तरह से स्वस्थ हुँ।

राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम (साईट सेवर्स)
Raahi Truckers Eye Health Program (Sight Savers) 2023-24

पृष्ठभूमि- साईट सेवर्स व रेबन के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा संचालित राष्ट्रीय ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम के तहत जून 2018 से सभी ट्रक ड्राईवरो व क्लिनर की निःशुल्क ऑखो की जॉच व चश्मे वितरण किये जा रहे है। साथ ही जयपुर से ब्यावर व मकराना से गुलाबपुरा नेशनल हाईवे पर लगभग 500 Km तक एक माह में 3 से 4 नेत्र जॉच शिविर आयोजन किया जाता है। जिसमें ऑखो की जॉच के साथ ही ब्लड शुगर, रक्तचाप, वजन ऊँचाई का मापन आदि मापने के कार्य किये जाते है। फिर उन्हें विजन टेक्निशियन के पास ऑखों कि स्क्रनिंग के लिए भेजा जाता है। वहॉ से उन्हे अलग अलग ग्रेड मिलती है। जिस आधार पर ऑपटोमेट्रिस्ट उनकी ऑखो की जॉच करता है। यदि उन्हें चश्में की आवश्यकता होती है तो ही वह उन्हें चश्मा वितरण के लिए कहता है। साथ ही टीम द्वारा सभी ड्राईवरों को स्वास्थ्य शिक्षा व आर्थिक स्थिति के बारे में विस्तार से समझाया जाता है। सभी ट्रक ड्राईवरो को यह भी बताया जाता है कि प्रत्येक 6 माह से अपनी ऑखो की जॉच करवाना अनिवार्य है। उन्हें पोष्टिक आहार व ऑखों की सही देखभाल के लिए प्रेरित किया जाता है।

इस कार्यक्रम में जून 2018 से 31 मार्च 2024 तक 35056 ट्रक ड्राईवर व क्लीनर लाभान्वित हो चुके है। जिसमें 14746 चश्में वितरीत हो चुके है।

साईट सेवर्स, नई दिल्ली व रेबन के वित्तीय व तकनीकि सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा जून 2018 से राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम शुरू किया गया। ट्रक ड्राइवरों के समुदाय के लिये देश के सबसे बडे नेत्र स्वास्थ्य कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम है। राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम जो मई 2019 तक सुचारू रूप से चलने के बाद वर्ष 2019 से अब तक चल रहा है। इस कार्यक्रम के प्रारम्भ में सारे कार्यकर्ताओं को टेबलेट व पोर्टल को चलाने हेतु प्रशिक्षण दिया गया और उसके बाद दिनांक 21 जून 2018 को कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। जिसमें साईट सेवर्स से श्री अमरेश पाण्डे, श्री शेलेन्द्र व सुश्री वरिधि सिंह भी उपस्थित थे। श्री शेलेन्द्र सर के द्वारा उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं को टेबलेट की समस्त डाटा एन्ट्री जैसे विभिन्न होटल व साईट सेवर्स के लामाना सेन्टर (राही दृष्टि केन्द्र) पर आये ड्राईवरो व क्लीनरों का बेसिक विवरण भरना, साईट सेवर्स के पेल्यूसिड पोर्टल पर क्यू आर कोड जनरेट करना, केम्प जनरेट करना तथा चश्मों के आर्डर व उनकी डिलीवरी दिखाना आदि के बारे में जानकारी दी। सभी गतिविधियों का प्रशिक्षण पाने के बाद दिनांक 22.06.2018 को पहला केम्प विजन सेन्टर लामाना में रखा गया और उसके बाद से ही कार्यक्रम निरन्तर प्रगति कर रहा है तथा ज्यादा से ज्यादा ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों को कार्यक्रम के तहत लाभ प्रदान किया जा रहा है। मार्च 2019 में एक वर्ष सफलता पूर्वक पूरा करने के बाद इस कार्यक्रम को मई 2019 में विजिन सेन्टर किशनगढ में स्थानान्तरित कर दिया गया क्योकि यहाँ भीलवाडा, ब्यावर व पंजाब तीनों रूट के सारे ट्रक ड्राईवर आते हैं व यहाँ से चश्में डिलीवर करना भी आसान हो जाता है।

साईट सेवर्स के वित्तीय सहयोग से जो विजन सेन्टर वर्ष 2018 में खोला गया था वह लामाना में एन.एच. रोड से 100 मीटर की दूरी पर बना हुआ था। अब वर्ष 2019 में यह विजन सेन्टर किशनगढ में देव मार्केट, मकराना राज होटल के सामने, तोलामाल में स्थानान्तरित कर दिया है। इस कार्यक्रम में 5 कार्यकर्ताओ की टीम है। एक ओप्टोमेट्रिस्ट, दो सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता, एक सहायक ऑप्टोमेट्रिस्ट व एक लेखाकार है। विजिन सेन्टर में प्रथम टेबल पर ट्रक ड्राईवरो व क्लीनरों का रजिस्ट्रेशन किया जाता है, दूसरी टेबल पर स्क्रीनिंग टेस्ट व तृतीय टेबल पर ऑप्टोमेट्रिस्ट होता है। सब से पहले कम्यूनिटी हेल्थ वर्कर होटल पर आये हुए ड्राइवरो से बात कर उन्हे आँखों की जाँच करवाने हेतु प्रेरित करता है और उन्हे सेन्टर पर भेजता है टेबल न. 1 पर ट्रक ड्राइवरों को बैठा कर उनका आई कार्ड बनाया जाता है व उनसे ड्राइविंग लाईसेन्स मांगा जाता है। साथ ही अन्य जानकारी जैसे नाम, उम्र, मोबाईल नम्बर, ड्राइविंग लाईसेन्स, रिन्यूवल की दिनांक, वेतन, उनकी गाडी का रूट, जाति, जीवन, मेडिकल व अन्य बीमा है या नहीं, शराब व सिगरेट पीने की आदत, दूर से उन्हे कैसा दिखता है, मेडिकल जाँच करवाते है या नहीं, कभी उनका एक्सीडेन्ट तो नहीं हुआ आदि विभिन्न प्रकार की जानकारी लेते है। उसके बाद टेबल नम्बर 2 पर उनकी आँखों की जाँच की जाती है और उसके बाद उनको ग्रेड दी जाती है। यदि ग्रेड ए मिली होती है तो ड्राईवर पुनः 1 नम्बर टेबल पर जाता है और यदि अन्य ग्रेड मिली होती है तो 3 नम्बर टेबल पर जाता है और उसे कौन से नम्बर का चश्मा लगेगा यह जाँच किया जाता है। यदि उसे पास की नजर की परेशानी होती है तो उसे उसी वक्त चश्मा दे दिया जाता है और यदि दूर का या बाय फोकल आता है तो उस चश्में का आर्डर दिया जाता है जो कि टेबल नम्बर 1 पर होता है।

उद्देश्य-

1. ट्रकर्स को प्राईमेरी आई केयर सर्विसेज उपलब्ध करवाना जिनको जाँच व रिफ्रेक्शन की जरूरत हैं उन्हें इस कार्यक्रम के द्वारा मद्द करना।

2. आँखों के स्वास्थ्य की महत्वता को ध्यान में रखकर लोगों को जागरूक करना।
3. तकनीकी की मद्द से सारे ट्रक ड्राईवरों का डाटा एकत्रित करना।
4. राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कार्यक्रम के नाम से ही स्पष्ट है। इसका मुख्य उद्देष्य ट्रक ड्राईवर्स, क्लीनर्स की आँखों की जाँच कर उन्हें चश्मा वितरण करना, आँखों को सुरक्षित रखने के लिए समय–समय पर उनकी जाँच करवाना नियमित रुप से आँखो को ठण्डे साफ जल से धोना चाहिए व अन्य जानकारी उपलब्ध करवाना जिससे वे अपनी आँखों का बेहतर तरीके से ध्यान रख सके।
5. आँखों की देखभाल करने के साथ–साथ अपनी व अपने परिवार की सम्पूर्ण सेहत का ध्यान रखने के लिए प्रेरित करना है। सड़क दुर्घटनाओं को कम करना।
6. समय न मिल पाने के कारण जो ट्रक ड्राईवर व क्लीनर आँखो की जाँच नहीं करवा पाते है उन्हें उनके रास्ते में ही आँखो की जाँच का केन्द्र उपलब्ध करवाना।
7. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को उनके स्वास्थ्य व बेहतरीन जीवन जीने के लिए प्रेरित करना।
8. ट्रक ड्राईवर्स तथा उनके परिवार को सुरक्षित भविष्य दिलवाना।
9. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना।
10. कम आय के कारण ट्रक ड्राईवर व क्लीनर अपनी आँखों की जाँच नहीं करवा पाते हैं इस समस्या को दूर करने के लिए उन्हें इस कार्यक्रम के माध्यम से उनके कार्यस्थल पर आँखों की जाँच की सेवायें व चश्में आसानी से उपलब्ध करवाना।
11. जानकारी के अभाव में वे अपनी आँखों में जलन होने, पानी आने व अन्य समस्या पर ध्यान न देकर इसे सामान्य समस्या या आँखें की थकावट का कारण समझते हैं ऐसी स्थिति में उन्हें आँखें कमजोर होने व समय के साथ–साथ आँखों की रोशनी कम हो जाती है। इसकी जानकारी देना जिससे वे अपनी समस्या के प्रति जागरुक हो और इस ओर ध्यान दें।
12. उन्हें अपनी सेहत की महत्ता समझाना व बताना की स्वास्थ्य ही मनुष्य के जीवन का सबसे बडा धन है। अगर हम शारीरिक रुप से स्वस्थ रहेंगें तो ही मानसिक व अन्य रुप से स्वस्थ व खुश रहेंगें, जिससे हर कार्य अच्छे से कर पाएंगें। अपने जीवन के लक्ष्य प्राप्त करेंगें व अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत कर पाएंगें। अतः स्वस्थ रहना आवश्यक है।

गतिविधियाँ –

1. **एक विजन सेन्टर की स्थापना करना तथा विभिन्न होटलो पर केम्प आर्गेनाइज करना**– प्रशिक्षित ऑपटोमेट्रिस्ट, ऑपथेल्मिक असिस्टेन्ट के द्वारा विभिन्न होटलो पर केम्प आयोजित कर उन ट्रक ड्राईवरों को कवर करना जो की रास्ते से निकल रहे है।

2. **ट्रकिंग समुदाय के लिए नेत्र स्वास्थ्य शिक्षा**– नेत्र देखभाल से संबन्धित भेद्यता और जोखिम को कम करने के लिए दृष्टिकोण, सूचना और कौशल के साथ ट्रक ड्राईवरों के बीच नेत्र स्वास्थ्य की मांग को बढावा देने के लिए ट्रकर्स समुदाय के साथ विभिन्न आईईसी गतिविधियाँ करना।

3. **ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच**– कार्यक्रम के अन्तर्गत विजन सेन्टर (लामाना), विभिन्न होटल जैसे जगदम्बा, लाडी, राज चिडिया, ट्रांसपोर्ट नगर, एच.पी. गैस प्लांट व बी.पी. गेस प्लांट पर आँखे जाँचने हेतु शिविर आयोजित किया जाता है। जिसमें जून से लेकर मार्च 2019 तक लगभग 3981 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई उसके बाद अप्रैल 2019 से मार्च 2020 तक लगभग 6942 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई, वर्ष अप्रैल 2020 से मार्च 2021 तक लगभग 5158 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई, वर्ष अप्रैल 2021 से मार्च 2022 तक लगभग 5787 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गइ, वर्ष अप्रैल 2022 से मार्च 2023 तक लगभग 6498 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई, वर्ष अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक लगभग 6690 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई। इस प्रकार कार्यक्रम के प्रारम्भ होने से लेकर मार्च 2024 तक कुल 35056 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई।

4. **चश्मों का वितरण**– ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच करने के बाद यदि उन्हें देखने में परेशानी होती है तो आँखों की जाँच के अनुसार समस्या का पता कर उन्हें पास व दूर के चश्मे वितरीत किए जाते है। जिनको पास की नजर में परेशानी होती है उन्हे पास की नजर का चश्मा उसी वक्त दे दिया जाता है और जिन्हें दूर की नजर में परेशानी होती है उनके लिए चश्मा ऑर्डर किया जाता है। जो एक सप्ताह बाद आ जाता है और ट्रक ड्राईवरों के वापस आने पर उन्हें दे दिया जाता है। जून से लेकर माह मार्च 2019 तक 1300 चश्में वितरीत किए गए, अप्रेल 2019 से मार्च 2020 तक 1966 चश्में वितरीत किए गए, अप्रेल 2020 से मार्च 2021 तक 2295 चश्में वितरीत किए गए, अप्रेल 2021 से मार्च 2022 तक 3195 चश्में वितरीत किए गए, अप्रेल 2022 से मार्च 2023 तक 2495 चश्में वितरीत किए गए, अप्रेल 2023 से मार्च 2024 तक 3495 चश्में वितरीत किए गए। इस प्रकार कार्यक्रम के प्रारम्भ होने से लेकर मार्च 2024 तक कुल 14746 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों को चश्में वितरीत किए गए।

5. जागरूकता फैलाना– राही ट्रक्स आई हेल्थ कार्यक्रम के द्वारा सभी ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को जीवन बीमा, एक्सीडेण्ट बीमा करवाने के साथ ही समय–समय पर बी.पी., शुगर चेक करवाने, मंथली हेल्थ चेकअप, आँखों की जाँच करवाने, पोष्टिक आहार खाने व काम के साथ–साथ अपनी सेहत को भी महत्वता देनी चाहिए इत्यादि के बारे में जागरूकता फैलायी जाती है।

6. विश्व दृष्टि दिवस पर स्वास्थ्य केम्प का आयोजन– विश्व दृष्टि दिवस के अवसर पर राही ट्रक्स आई हेल्थ कार्यक्रम तथा हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम के द्वारा नेशनल हाईवे 79 पर रामपुरा गाँव में आई हेल्थ केम्प का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत 60 ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों के आँखों की जाँच की गई तथा साथ ही उनके परिवार की स्वास्थ्य जाँच भी की गई जिसके अन्तर्गत 20 ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को चश्में वितरित किये गये। 64 व्यक्तियों ने स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया तथा 13 गर्भवती महिलाओं ने भी शिविर में स्वास्थ्य जाँच कराई और दवाईयाँ प्राप्त की।

7. प्रचार–प्रसार कर ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना– राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम अन्तर्गत पेम्पलेट बाँट कर व बेनर लगाकर प्रचार–प्रसार किया जाता है तथा ज्यादा से ज्यादा ड्राईवरो को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

8. एस.आई.ए.एम. केम्प – राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम के अन्तर्गत नेशनल हाईवे 8 पर एस.आई.ए.एम. केम्प का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य "जीवन रक्षा सड़क सुरक्षा" रखा गया। जिसमें जीवन रक्षा व उसके महत्व तथा "सावधानी हटी दुर्घटना घटी" जैसे विषयो पर लोगो को जागरूक किया गया। इसके दो केम्प का आयोजन किया गया। पहला केम्प 4 फरवरी 2021 को गेगल टोल प्लाजा पर आयोजन किया गया जिसमें 62 ट्रक ड्राइवरों तथा क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई और 27 ड्राइवरों तथा क्लीनरों को चश्में वितरित किये गये। इसी प्रकार दुसरा केम्प जी.वी.के. टोल प्लाजा पर आयोजित किया गया जिसमें 65 ट्रक ड्राइवरों तथा क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई और 8 लोगो को चश्में वितरित किये गये।

9. राही फोटो कॉम्पिटीशन – साइट सेवर के द्वारा राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम के अन्तर्गत एक ऑल इन्डिया फोटो कॉम्पिटीशन का आयोजन किया गया जिसमें इस कार्यक्रम के द्वारा चश्मा प्राप्त करने के बाद ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की खुशी तथा भावों को फोटो के माध्यम से दर्शाना था। जिसमें ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा संचालित राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम (तोलामाल) के परियोजना समन्वयक अमर भार्गव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। ग्रामीण महिला विकास संस्थान के लिये एक बड़ी उपलब्धी है। फोटो कॉम्पिटीशन की केस स्टडी निम्न है–

केस स्टडी

पृष्ठभूमि– रामवतार ग्राम तासरबडी तहसील सीकर के रहने वाले हैं। उनकी उम्र 33 वर्ष है। उनकी पत्नि का नाम सुनिता देवी है जो 30 वर्ष की हैं। रामवतार के एक बेटे व दो बेटियाँ हैं। उसके बड़े बेटे का नाम जयन्त है वह 6 साल का है और पहली कक्षा में पड रहा है। उनकी बेटियो के नाम पूजा कुमारी व अनिता कुमारी है। अनिता कुमारी 10 वर्ष की है वह 6वीं कक्षा में पढ़ती है। और एक बेटी 12 साल की है व 8वीं कक्षा में पढ़ती है।

कार्यक्रम से जुडाव– रामवतार एक ट्रक ड्राइवर हैं। उनकी ट्रांसपोर्ट कम्पनी का नाम O.T.C. है व 15 साल से लगातार गाड़ी चलाने के कारण उन्हें अपनी स्वास्थ्य जाँच के लिये समय नहीं मिल पाता है। कुछ समय से वे सिर दर्द, आँख में पानी आना, आँखों में दर्द जैसी समस्या से पीड़ित है लेकिन समय न मिलने के कारण वे इन पर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं। परिवार वालों के जोर देने पर वे डॉक्टर के पास गये और उन्हें अपनी समस्या बताई।

डॉक्टर ने उनकी जाँच की और उन्हें आँखे चैक करवाने को कहा। उनकी परिवार की आय का साधन ड्रांईविंग व कृषि है। एक दिन वे मकराना होटल पर खाना खाने के लिये रूके और वहाँ उनकी मुलाकात राही ट्रकर्स आई हेल्थ प्रोग्राम के स्वास्थ्य कार्यकर्ता से हुई। रामवतार ने उसे अपनी आँखों की समस्या के विषय में बताया। राही टिम ने उन्हें राही ट्रकर्स आई हेल्थ प्रोग्राम के बारे में बताया और उन्हें विजन सेन्टर पर आ कर आँखें चैक करवाने को कहा। उन्हें सलाह दि गई कि साल में एक बार जॉच जरूर कराये और साफ पानी से अपनी अपनी ऑखों को धोऍ और अच्छे चश्में का उपयोग करे। उसके बाद रामवतार विजन सेन्टर पर गये और आँखों की जाँच करवा कर चश्मा प्राप्त किया और अब वे बहुत खुश हैं।

निष्कर्ष– अब उनकी सारी समस्याऍ समाप्त हो गई हैं। अब वे चश्मा पहनकर ही गाड़ी चलाते हैं। अब उनका परिवार उनकी ओर से

निश्चिन्त है। उन्होने अपनी आर्थिक व पारिवारीक स्थिति को सुधारने के लिए सुझाव दिया कि अपनी आय कि बचत करे व अपने बच्चो को अच्छी शिक्षा दे।

उपलब्धियाँ– इस कार्यक्रम के द्वारा विजन सेन्टर व विभिन्न होटलों पर केम्प लगाया जाता है। जिसमें विजन सेन्टर पर प्रति दिन लगभग 12 ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की तथा होटल पर प्रति दिन लगभग 55 ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखें जाँच की जाती है। आँखों की जाँच के केम्प राज चिडिया, लाडी, ट्रांसपोर्ट नगर, एच.पी. गैस प्लांट, बी.पी. गैस प्लांट आदि जगहों पर लगाये जाते है। जिनका जून, 2018 से मार्च, 2024 तक का डाटा निम्न प्रकार है–

वर्ष	विजन सेन्टर पर ओपीडी	केम्प पर ओपीडी	कुल	कुल चश्मे वितरित
जून 2018 से मार्च 2019	1344	2637	3981	1300
अप्रेल 2019 से मार्च 2020	3636	3306	6942	1966
अप्रेल 2020 से मार्च 2021	3667	1491	5158	2295
अप्रेल 2021 से मार्च 2022	4423	2361	6784	3164
अप्रेल 2022 से मार्च 2023	4808	1690	6498	2495
अप्रेल 2023 से मार्च 2024	4910	1780	6690	3495
कुल	**22788**	**13265**	**36053**	**14715**

इसी माह में दिनांक 19 व 20 जून 2018 को सारे कार्यकर्ताओं का टेबलेट व पोर्टल को चलाने हेतु प्रशिक्षण रखा गया और दिनांक 21 जून 2018 को कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। जिसमें साईट सेवर्स से श्री अमरेश पाण्डे, श्री शेलेन्द्र व सुश्री वरिधि सिंह भी उपस्थित थे। श्री शेलेन्द्र सर के द्वारा टेबलेट की समस्त डाटा एन्ट्री जिसमें विभिन्न होटल व साईट सेवर्स के लामाना सेन्टर (राही दृष्टि केन्द्र) पर आये ड्राईवरों व क्लीनरों का बेसिक विवरण भरना होता है तथा कैसे साईट सेवर्स के पेल्यूसिड पोर्टल पर क्यू आर कोड जनरेट करना, केम्प जनरेट करना, चश्मों के आर्डर व उनकी डिलीवरी दिखातें है यह सब बताया। सभी गतिविधियों का प्रशिक्षण पाने के बाद दिनांक 22.06.2018 को पहला केम्प विजन सेन्टर लामाना मे रखा गया और उसके बाद से ही कार्यक्रम निरन्तर प्रगति कर रहा है तथा ज्यादा से ज्यादा ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों को कार्यक्रम के तहत लाभ प्रदान किया जा रहा है।

साईट सेवर्स के वित्तीय सहयोग से जो विजन सेन्टर खोला गया है वह लामाना में एन.एच. रोड से 100 मीटर की दूरी पर बना हुआ है। जिसमें 5 कार्यकर्ताओं की टीम है एक ओप्टोमेट्रिस्ट, दो सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता, एक सहायक ऑप्टोमेट्रिस्ट व एक लेखाकार है। विजिन सेन्टर में प्रथम टेबल पर ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों का रजिस्ट्रेशन किया जाता है, दूसरी टेबल पर स्क्रीनिंग टेस्ट व तृतीय टेबल पर ऑप्टोमेट्रिस्ट होता है। सबसे पहले कम्यूनिटी हेल्थ वर्कर होटल पर आये हुए ड्राइवरों से बात कर उन्हें आँखों की जाँच करवाने हेतु प्रेरित करता है और उन्हें सेन्टर पर भेजता है टेबल न. 1 पर ट्रक ड्राइवरों को बैठा कर उनका आई कार्ड बनाया जाता है व उनसे ड्राइविंग लाईसेन्स मांगा जाता है। साथ ही अन्य जानकारी जैसे नाम, उम्र, मोबाईल नम्बर, ड्राइविंग लाईसेन्स, रिन्यूवल की दिनांक, वेतन, उनकी गाडी का रूट, जाति, जीवन, मेडिकल व अन्य बीमा है या नहीं, शराब व सिगरेट पीने की आदत, दूर से उन्हे कैसा दिखता है, मेडिकल जाँच करवाते है या नहीं, कभी उनका एक्सीडेन्ट तो नहीं हुआ आदि विभन्न प्रकार की जानकारी लेते है। उसके बाद टेबल नम्बर 2 पर उनकी आँखों की जाँच की जाती है और उसके बाद उनको ग्रेड दी जाती है। यदि ग्रेड ए मिली होती है तो ड्राईवर पुनः 1 नम्बर टेबल पर जाता है और यदि अन्य ग्रेड मिली होती है तो 3 नम्बर टेबल पर जाता है और उसे कोनसे नम्बर का चश्मा लगेगा यह जाँच किया जाता है। यदि उसे पास की नजर की परेशानी होती है तो उसे उसी वक्त चश्मा दे दिया जाता है और यदि दूर का या बाय फोकल आता है तो उस चश्में का आर्डर दिया जाता है जो कि टेबल नम्बर 1 पर होता है।

नेशनल ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम, उभर–जयपुर (राज.)

National Truckers Eye Health Project, Uber-Jaipur (Rajasthan) 2023-24

पृष्ट भूमि और परियोजना विवरण–

वर्तमान ट्रकर्स कार्यक्रम की परिकल्पना इस तरह से कि गई है कि इसे सबसे अधिक लागत प्रभावी तरिके से अधिकतम लाभार्थियों तक पहुॅचाया जा सके, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि ऐसी प्राथमिक नेत्र देखभाल सेवाएॅ न केवल गुणवत्ता में अच्छी हो बल्कि लक्षित समुदायो के लिए आसानी से सुलभ स्थानो पर भी हों। इस दर्शन को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम के लिए भोगोलिक मानचित्रण स्वर्णिम चतुर्भुज के इर्द गिर्द घूमने के लिए तैयार किया गया है, जो भारत के चार शीर्ष महानगरीय शहरो को जोडने वाले राजमार्गो का एक नेटवर्क है, अर्थात् उत्तर में दिल्ली, पश्चिम में मुंबई और दक्षिण में चैन्नई और पूर्व में कोलकाता प्रमुख पडाव बिन्दू, गोदाम, ट्रांस–शिपमेन्ट स्थान, परिवहन नगर, बंदरगाह और उद्योग,यार्ड आदि सभी इन लाइनो के साथ स्थित है, जिससे ट्रकर्स समुदाय को अपने काम की प्रकृति के आधार पर ऐसे स्थानो पर यात्रा करने और आने जाने की आवश्यकता होती है और साथ ही संक्रमण के बीच बडी संख्या में एकत्र होती है।

परियोजना लक्ष्य–

परियोजना लक्ष्य इस प्रकार है–

शिविर				
जगह	कुल शिविर	OPD प्रति शिविर	OPD प्रति वर्ष	चश्में (40 प्रतिशत)
जयपुर	30	65	1950	780

दृष्टि कोण और गतिविधियॅा–

आउटरिच आधारित दृष्टिकोण:–

कार्यक्रम के अन्तर्गत एक प्रमुख दृष्टिकोण आउटरिच शिविर आधारित दृष्टिकोण है। परिवहन नगरो, बंदरगाह, प्रमुख जंक्शनों, बेडे के स्थानो आदि के आसपास ट्रक चालको के लिए आउटरिच स्क्रीनिंग गतिविधियों को शुरू करना। एक महिने में लगभग 4–5 आउटरीच शिविर होगे। एमआईएस के लिए इंटरनेट कनेक्शन वाले टैबलेट उपलबध कराए जाएंगे।

इन शिविरो में एक ऑप्टोमेट्रिस्ट, विजन तकनीशियन, स्वास्थ्य कार्यकर्ता और एक शिविर आयोजक होगे। इन शिविरों में लाभार्थियों के लिए स्क्रीनिंग, अपवर्तन, चश्मा वितरण जैसी सेवाएॅ उपलब्ध कराई जायेगी। इन शिविरो में स्क्रीनिंग और अपवर्तन के लिए आवश्यक उपकरण जैसे पोर्टेबल स्लिट लैंप, अपवर्तन सेट, विजन ड्रम ऑप्थाल्मोस्कोप, रेटिनोस्कोप आदि उपलब्ध कराए जाएंगे। एमआईएस के लिए इंटरनेट कनेक्शन वाले लैपटॉप या टैबलेट उपलबध कराए जाने की आवश्यकता है।

वर्तमान चरण के लिए नियोजित गतिविधियॅा–

1. **कार्यान्वयन भागीदारो की पहचान और नेटवर्किंग** – साईटसेवर्स के बाद सभी स्थानो पर कार्यक्रम कार्यान्वयन एजेंसियों (नेत्र देखभाल ईकाइयों, स्थान–आधारित गैर सरकारी संगठन) के साथ बुनियादी परिचालन मोड भागीदारी बनाई जायेगी।
2. **ड्राइवरों और सहायक कर्मचारियों के लिए आउटरिच कार्यक्रम का आयोजन**– प्रशिक्षित ऑप्टोमेट्रिस्ट, नेत्र सहायक द्वारा संचालित आउटरिच शिविरों का आयोजन किया जायेगा, ताकि पहले से ही चल रहे ट्रकर के बेडे के सदस्यों को विशेष रूप से शामिल किया जा सके।
3. **ट्रकिंग समुदायो के लिए नेत्र स्वास्थ्य शिक्षा**– आंखों की देखभाल से संबन्धित भेद्यता और जोखिम को कम करने के लिए दृष्टिकोण, जानकारी और कौशल के साथ ड्राईवरों के बीच नेत्र स्वास्थ्य की तलाश करने के व्यवहार को बढावा देने के लिए बेडे के साथ विभिन्न प्र गतिविधियॅा की जायेगी। लागत प्रभावी नेत्र स्वास्थ्य उपचार और रेफरल सेवाओ की उपलब्धता के बारे में जानकारी भी उत्पन्न की जायेगी, जिससे वहनीयता और पहुॅच के मुद्दो का समाधान किया जा सके।
4. **डेटा संग्रह और डेटा संग्रह पर कर्मचारियों का प्रशिक्षण**– पिछले वर्ष की कार्य योजन के अनुसार परियोजना डेटा का संग्रह किया जायेगा। डेटा एकत्र करने वाले कर्मचारियों को अधिक सटीक डेटा संग्रह सुनिश्चित करने के लिए उचित डेटा संग्रह प्रक्रियाओं पर प्रशिक्षित किया जायेगा।

सक्षम ट्रक चालको एवं सहायको के लिए नेत्र स्वास्थ्य जॉच केन्द्र निम्बाहेडा चित्तौडगढ (राज.)

Truckers Community Livelihood Strengthning Project, Nimbahera-Chittorgarh 2023-24

अरावली व चोला मण्डलम के वित्तीय सहयोग से संचालित ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा संचालित प्रोग्राम सक्षम ट्रक चालको व सहायको के लिए नेत्र स्वास्थ्य जॉच केन्द्र निम्बाहेडा से शुरूआत की गई इस कार्यक्रम में अब तक 1670 ट्रक चालको व सहायको की ऑखो की जॉच की गई 14 केम्प किए गये जिन में से एवरेज ओ.पी.डी. 60 कि गई।

हमारे स्वास्थ्य मित्र द्वारा आसपास ट्रांसपोर्ट में जाकर विजन सेन्टर के बारे में जानकारी दी जाती है VC में आते ही ड्राईवर को सेनेटाईज किया जाता है थर्मल स्केनर से तापमान मापा जाता है। ड्राईवर के पास मास्क ना हो तो मास्क उपलब्ध करवाया जाता है।

हाईट व out मापा जाता है, ब्लड प्रेशर व शुगर की जॉच की जाती है OPD रजिस्टर में ट्रक चालक के लाईसेन्स के द्वारा जानकारी ली जाती है।

ड्राईवर का फॉर्म भरा जाता है। A.R. मशीन द्वारा ऑखो की जॉच की जाती है। रिफलेक्शन किया जाता है।

ड्राईवर को नजदिक या दूर से देखने में समस्या होने पर चश्में का नम्बर निकाला जाता है। नेत्र सहायक द्वारा चश्मा वितरण रजिस्टर में एन्ट्री व हस्ताक्षर कराया जाता है व चश्मा वितरण किया जाता है।

खान पान व बेहतर दृष्टि के लिए सुझाव दिए जाते है। साथ ही अपने ट्रक चालको व सहायको को इस विजन सेन्टर और यहॉ की सुविधाओ के बारे में जानकारी देने का आग्रह किया जाता है।

ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम - भीलवाड़ा

Truckers Community Livelihood Strengthening Project - Bhilwara 2023-24

कार्यक्रम की पृष्ठभूमि:- चोलामण्डलम व अरावली के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा आयोजित ट्रकर कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम का उद्घाटन 16.06.2019 को भीलवाड़ा व चित्तौड़गढ़ हाइवे 79 पर शुभारम्भ किया। इस अवसर पर संस्थान सचिव शंकरसिंह रावत ने ट्रक, ट्रेलर व बस चालकों के विषय में कहा कि वाहन चालको को समय–समय पर स्वास्थ्य जाँच करानी चाहिए। ट्रक, ट्रेलर व बस चालकों के सामने चौकन्ना रहना, यातायात नियमों का पालन, भूख–प्यास, समय पर गंतव्य स्थान पहुंचने समेत कई तरह के दबाव होते है। इन सब के बीच संयमित रहकर बिना तनाव के भारी वाहन चलाना किसी चुनौती से कम नहीं है। इन शिविरों के माध्यम से वाहन चालको को लाभ प्राप्त होगा। इस वर्ष कार्यक्रम के तहत ट्रक चालक के स्वास्थ्य शिविर केम्प किये गये जिसमें 4409 ट्रक ड्राइवरो/क्लीनरों की आँखों व स्वास्थ्य की जाँच कर 1309 लोगो को चश्में बाँटे गये।

कार्यक्रम के उद्देश्य :–

1. रोजाना हो रहीं सड़क दुर्घटनाओं को कम करना।
2. समय न मिल पाने के कारण जो ट्रक ड्राईवर व क्लीनर आँखों की जाँच नहीं करवा पाते हैं उन्हें उनके रास्ते में ही आँखों की जाँच के केन्द्र उपलब्ध करवाना।
3. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करना व बेहतरीन जीवन जीने के लिए प्रेरित करना।
4. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना।
5. कम आय के कारण ट्रक ड्राईवर व क्लीनर अपनी आँखों की जाँच नहीं करवा पाते हैं इस समस्या को दूर करने के लिए उन्हें इस कार्यक्रम के माध्यम से उनके कार्यस्थल पर आँखों की जाँच की सेवायें व चश्में आसानी से उपलब्ध करवाना।
6. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को अपनी आँखों की जाँच करवाने के साथ–साथ अपने परिवार के सदस्यों को भी उनकी आँखों की देखभाल करने के प्रति जागरुक करने के लिए प्रेरित करना।
7. ट्रक ड्राईवर व क्लीनर आँखों मे जलन होने, पानी आने, कम दिखाई देना आदि समस्याओं पर ध्यान न दे कर जानकारी के अभाव में इन समस्याओं को सामान्य समझ कर ध्यान नहीं देते हैं इसलिए उन्हें उनकी आँखों के प्रति जागरुक करने के लिए

आवश्यक जानकारी दी गयी। आँखों की रोशनी कम होने पर ये सभी समस्याएँ होती है व इससे बचाव व उपचार करना आवश्यक है।

8. आँखों से संबंधित समस्या दूर करने के लिए उन्हें आसान उपाय बताना जैसे– पोष्टीक आहार लेना, समय–समय पर आँखों की जाँच करवाना, कम रोशनी में काम न करना, समय पर सही उपचार लेना आदि जिससे वे अपनी आँखों की देखभाल अच्छे से कर सके।
9. उन्हें स्वस्थ रहने के फायदे बताना तथा आँखों के अतिरिक्त सरकार द्वारा चलाई जा रही अन्य परियोजना के माध्यम से अन्य स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्याओं का भी समय पर उपचार करवाने व स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करना।

कार्यक्रम की गतिविधियॉ :-

संस्था द्वारा विजन सेन्टर पर 3297 ड्राइवर व सहायक की आँखों की जाँच की गई तथा दिनांक 24.09.2020 से 22.03.2021 तक केम्प लगाये गये जिसमें 1112 ड्राइवर व सहायक की आँखों की जाँच की गई। इस प्रकार ड्राइवर व सहायक की आँखों की जाँच कर 1309 व्यक्तियों को चश्मा वितरीत किया गया।

1. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच– कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न होटल जैसे नानकपुरा गुरूद्वारा, ग्रीन प्लाजा होटल, लाडी होटल, एच.पी. गैस प्लांट, ए.बी.सी. होटल, भारत गैस प्लांट, इन्डियन गैस प्लांट व बिहारी होटल पर आँखें जाँचने हेतु दिनांक 24.09.2020 से 22.03.2021 तक शिविर आयोजित किये गये है। जिसमें लगभग 4409 ट्रक ड्राइवरो व क्लीनरो की आँखे जाँची गयी है।

2. चश्मों का वितरण– ट्रक ड्राईवरो व क्लीनरो की आँखों की जाँच करने के बाद यदि उन्हं देखने में परेशानी होती है तो आँखों की जाँच के अनुसार समस्या का पता कर उन्हें पास व दूर के चश्में वितरीत किए गये। जिनको पास की नजर में परेशानी होती है उन्हें पास की नजर का चश्मा उसी वक्त दे दिया जाता था और जिन्हें दूर की नजर में परेशानी होती है उनके लिए चश्मा ऑर्डर किया जाता था। जो एक सप्ताह बाद आ जाता है और ट्रक ड्राईवरो के वापस आने पर उन्हे दे दिया जाता है। इस कार्यक्रम में 1309 चश्मे वितरीत किए गए।

3. जागरूकता फैलाना– ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम के द्वारा सभी ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों के जीवन बीमा, एक्सीडेण्ट बीमा करवाने के साथ ही समय–समय पर बी.पी., शुगर चेक करवाने, मासिक स्वास्थ्य जाँच, आँखों की जाँच करवाने, पोष्टिक आहार खाने व काम के साथ–साथ अपनी सेहत को भी महत्वता देने इत्यादि के बारे में जागरूकता फैलायी गयी।

4. प्रचार-प्रसार कर ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरो को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना– ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम अन्तर्गत पेम्पलेट बाँट कर व बेनर लगाकर प्रचार–प्रसार किया जाता है तथा ज्यादा से ज्यादा ड्राईवरों को जोडने का प्रयास किया गया।

उपलब्धियाँ– इस कार्यक्रम के द्वारा वर्ष 2018 में कुल 33 केम्प आयोजित किए गए। जिसमें 2500 ड्राइवर व क्लीनर की आँखो की जाँच कर 1249 ड्राइवर व क्लीनर को चश्में वितरीत किये गये तथा वर्ष 2019 में कुल 13 नेत्र शिविरों का आयोजित किया गया। जिसमें 1516 ड्राइवर व क्लीनर की आँखो की जाँच कर 750 ड्राइवर व क्लीनर को चश्में वितरीत किये गये। जिनका डाटा इस प्रकार है।

ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण ईकाई परियोजना, नागौर (राज.)
Guargum And Isabgol Processing Cluster, Nagaur (Raj.)

(निरंतर एग्रो फूड प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड)

स्फूर्ति योजना के अंतर्गत ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा कम्पनी क्षेत्र में होने वाली ग्वार व इसबगोल की फसलों के प्रसंस्करण हेतु एक एस.पी.वी (SPV) का निर्माण किया गया जिसका नाम "ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण इकाई " रखा गया, जिसका मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- ❖ इकाई क्षेत्र के किसानों की ग्वार व इसबगोल की उपज को सही मूल्य पर खरीदना।

किसानों से खरीदी उपज को प्रसंस्करण करके ग्वारका गम व इसबगोल की भूसी बनाना साथ ही बचे हुए कचरे से पशु आहार का निर्माण करना।

- ❖ किसानों के बेहतर लाभ के लिए ब्रांडिंग, पैकिजिं ग एवं विपणन करना ।
- ❖ किसानों को देश के अन्य कृषि आधारित इकाइयों से जोड़ना ।
- ❖ किसानों को भारत सरकार की अन्य ग्रामीण विकास योजनाओ की विस्तृत जानकारी देना ।

- ❖ इकाई के व्यवसाय से होने वाले शुद्ध लाभ का :40 हिस्सा किसानों को हस्तांतरित करना ।

इस इकाई के अंतर्गत ग्राम बासनी जग्गा के आस–पास के 15 ग्रामों से लगभग 800 से अधिक किसानो को जोड़ा जा चूका है । इस ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण इकाई के अंतर्गत ग्राम बासनी जग्गा में कम्पनी के द्वारा लगभग 3 बीघा भूमि क्रय की हैं, जिसमे की ग्वार व इसबगोल के प्रसंस्करण के लिए **10000 Sq Feet** में सामान्य सुविधा केंद्र (**CFC**) का निर्माण किया जा रहा हैं, जिसमे ग्वार व इसबगोल को प्रसंस्करण के लिए मशीन रखने के साथ उपज का भण्डारण किया जा सके ।

इसी कार्यक्रम के तहत किसान उत्पादक संगठन –नागौर कार्यक्रम में ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा नागौर जिले के ग्राम पंचायत लाड़पुरा के ग्राम–बासनी जग्गा में किसान उत्पादक संगठन का संचालन किया जा रहा है। नाबार्ड के वित्तीय सहायता व मार्गदर्शन से कम्पनी एक्ट मे मार्च, 2016 मे रजिस्टर्ड करवाया गया। कम्पनी के माध्यम से किसानो की आय वृद्धि करवाने के लिए 800 किसान सदस्यों को कम्पनी से जोडा गया।

कम्पनी के मुख्य उद्धेश्य –

- ❖ किसानो मे जागरुकता बढाना।
- ❖ किसानो का क्षमतावर्धन करना।
- ❖ किसानो को तकनीकी जानकारी देना।
- ❖ समय पर गुणवत्तायुक्त खाद–बीज उपलब्ध करवाना।
- ❖ उपयोगकर्ता व उत्पादनकर्ता के मध्य दूरी कम करना।
- ❖ उत्पादित फसलों की ग्रेडिंग करवाना।

पंचायत समिति–रियाबडी की ग्राम पंचायत–लाड़पुरा के ग्राम–बासनी जग्गा में निरन्तर एग्रो फूड प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड का संचालन किया जा रहा है। किसान संगठन के सफल संचालन हेतु निम्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है –

मासिक बैठक – कम्पनी बोर्ड सदस्यों व कम्पनी शेयरधारको द्वारा मासिक बैठक आयोजित की जाती है। जिसमें कार्यो की समीक्षा तथा आगामी माह की कार्य योजना तैयार की जाती है।

पी.आई.एम.सी. बैठक – प्रोजेक्ट मोनेट्रींग कमेठी द्वारा हर त्रैमास में किये कार्यो की मोनेट्रींग की जाती है। साथ ही आगामी त्रैमास मे किये जाने वाले कार्यो के बारे मे जानकारी प्राप्त की जाती है। जिसमे नाबार्ड अधिकारी, कृषि पर्यवेक्षक, संस्थान सचिव, कम्पनी बोर्ड सदस्यो की उपस्थिति मे कम्पनी सी.ई.ओ. द्वारा कम्पनी कार्यो से अवगत करवाया जाता है।

वर्मी कम्पोस्ट खाद यूनिट – कम्पनी द्वारा किसानों को अपने खर्चे कम करने तथा उत्पादन में वृद्धि करने हेतु वर्मी कम्पोस्ट खाद – 100 यूनिटो का निर्माण करवाया गया तथा यूनिट निर्माण हेतु किसानो को कृषि विभाग द्वारा प्रति यूनिट 12000/– रुपये अनुदान उपलब्ध करवाए जाने हेतु आवेदन कराये गये जिनकी सब्सीडी शीघ्र किसान को मिल जायेगी।

खाद बीज दुकान – शेयरधारको व अन्य किसानो को समय पर खाद–बीज उपलब्ध करवाया गया है साथ ही स्थानिय क्षैत्र मे अच्छा उत्पादन देने वाली फसलो जिसमे – मूंग, मूंगफली के रिसर्च बीजो का भी उपयोग किया गया। जिनका किसानो का अच्छा उत्पादन मिला।

शैक्षणिक भ्रमण – किसानो को नवीन जानकारी व तकनीकी जानकारी उपलब्ध करवाने काजरी संस्थान का तीन दिवसीय भ्रमण करवाया गया। जिसमे कृषक मेले मे किसानो ने जानकारी प्राप्त की तथा विभिन्न बीजीय किस्मो से अवगत हुए।

अन्य गतिविधि :–

- ❖ गाँव के नवयुवक सगठन में युवतियों को जोडने का प्रयास किया।
- ❖ लोगों के मुद्दे के अलावा अन्य समस्या पर मद्द की।
- ❖ पानी की टंकियाँ ठीक करवाई।
- ❖ स्कूल में ज्योतिबा राव फूले पर कार्यक्रम रखा।
- ❖ बालिकाओं की शिक्षा को लेकर महिलाओं को मूवी दिखाई।
- ❖ पानी की समस्या को लेकर गाँव में सर्वे किया और लोगों से टंकी व नल के लिए राय ली गई।

बाजरा प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन कार्यक्रम
Millet Processing And Value Addition Cluster, Ajmer 2023-24
Scheme of Fund For Regenration of Traditional Industries (SFURTI)

लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्रालय भारत सरकार स्फूर्ति प्रोग्राम के अर्न्तगत नोडल एजेन्सी, पी.पी.डी.सी. आगरा, तकनीकी सहयोग तथा निसर्ग संस्थान भोपाल के मार्गदर्शन से ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा खायडा किसान समृद्धि प्रोड्युसर कम्पनी लिमिटेड में बाजरा प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन प्रोसेसिंग यूनिट लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के वित्तिय सहयोग से स्थापित की जा रही है। जिसमें कम्पनी से जुड़े किसानों को अपना उत्पादन स्थानीय स्तर पर बिना किसी खर्चे के बिक्री किया जा सकेगा। प्रोसेसिंग यूनिट से स्थानीय कारीगरों को रोजगार उपलब्ध होगा। जिसमें शेयर धारकों को अपनी आय बढ़ाने हेतु अवसर मिला है।

बोर्ड बैठक– खायडा किसान समृद्धि प्रोड्युसर कम्पनी लिमिटेड की मासिक बैठक व साप्ताहिक बैठकों का आयोजन किया गया। जिसमें भारत सरकार स्फूर्ति प्रोग्राम के अर्न्तगत दिये गये वित्तिय सहयोग से निर्माण कार्य के निरिक्षण हेतु जिम्मेदारी दी गई तथा निर्माण कार्य को स्फूर्ति के निर्णयानुसार किये जाने हेतु मान्य किया गया।

क्षमता वर्धन बैठक– बाजरा एवं मूल्य संवर्धन कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत सरकार के वित्तिय सहयोग से संचालित प्रोसेसिंग यूनिट से होने वाले लाभ तथा मिलने वाले रोजगार तथा नवीनतम कार्यो के बारे में किसानों का क्षमता वर्धन किया गया।

जागरूकता बैठक–किसानो को प्रोसेसिंग से होने वाले लाभ तथा किसानों की युनिट में अहम भूमिका के बारे में जागरूक किया गया तथा कम्पनी से जुडने हेतु प्रेरित किया गया। जागरूकता बैठक विभिन्न गाँवों में की गई। जिसमें स्थानीय स्तर पर उत्पादित फसलों का मूल्य संवर्धन कैसे किया जा सकता है, विषय पर चर्चा के माध्यम से जागरूक किया गया।

इसी प्रोग्राम में किसान उत्पादक संगठन, पं.स. भिनाय–अजमेर में नाबार्ड के वित्तिय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बुबानी द्वारा अजमेर जिला मुख्यालय से 80 किलोमीटर दक्षिण में नेशनल हाईवे–79 से 27 किलो मीटर दक्षिण पूर्व में पंचायत समीति–भिनाय के ग्राम बुबकिया व लामगरा में चार किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनीयों का गठन किया गया। जिसका किसानो के सहयोग द्वारा संचालन किया जा रहा हैं। चारो कम्पनियाँ कम्पनी एक्ट मे रजिस्टर्ड की हुई है। किसानो द्वारा उत्पादन की गई फसलों तथा उपयोग करने वाले लोगो के बीच में महाजन वर्ग द्वारा किया जाने वाला बिचौलियापन समाप्त करके व उत्पादन कर्ता प उपभोक्ता के मध्यदूरी कम करने हेतु प्रयास किया जा रहा है। किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी का मुख्य कार्य किसानों को समय पर प्रमाणित खाद, बीज व दवाईयाँ उपलब्ध करवाकर उनकी आय में वृद्धि करना है। कम्पनी द्वारा किसानों को उत्पदित फसलों के अच्छे दाम दिलवाने हेतु व नेफड को बिक्री करवाने हेतु तथा पोर्टल पर रजिस्टेशन करवाने हेतु प्रेरित किया जाता है। किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी के माध्यम से किसानों को एक अच्छा मंच मिला है। जहाँ किसानों को सरकारी योजनाओं की जानकारी समय पर मिल जाती है। समयानुसार आवेदन करने पर किसानों को याजना का लाभ प्राप्त हो जाता है। किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड का संचालन किसानों के खर्चो में कमी करवाने तथा प्रमाणित बीजों व नवीन तकनीकी का प्रयोग कर किसानों की आय वृद्धि के लिये किया जा रहा है।

पंचायत समीति भिनाय में किसानों के साथ कम्पनी गठन हेतु बैठक की गई। जिसमें किसानों की आवश्यकता को समझा गया, कम्पनी गठन के बारे में विस्तार से बताया गया और किसानों के स्वामित्व वाली कम्पनी रजिस्ट्रेशन के बारे में जानकारी दी गई। जिसमें भैरूखेड़ा–रैण किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी को मूंग उत्पादन पर कार्य करना निश्चित किया गया।

भैरूखेड़ा-रैण-उदयपुरखेड़ा-खायड़ा किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड कमेटी गठन व रजिस्ट्रेशन-

कम्पनी रजिस्ट्रेशन के लिये क्षेत्र में किसानों का सर्वे किया गया। जिसमें जिन किसानों के पास 1 से 15 बीघा जमीन है, उन किसानों के साथ बैठक की गई और उन्हें कम्पनी सदस्य बनने हेतु प्रेरित किया गया तथा साथ ही उन्हें किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी के उद्देश्य के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। उन्हीं किसानों द्वारा कम्पनी बोर्ड का गठन किया गया। कम्पनी रजिस्ट्रेशन हेतु 5 सदस्य प्रमोटर तथा 5 सदस्य डायरेक्टर के रूप में नियुक्त किये गये। जिनके डिजिटल हस्ताक्षर से कम्पनी एक्ट में कम्पनीयों का रजिस्ट्रेशन किया गया। सभी सदस्यों के सामूहिक प्रयास से कम्पनी का संचालन किया जा रहा है।

कम्पनी के मुख्य उद्धेश्य –

- ❖ किसानों की आय में वृद्धि करवाना।
- ❖ किसानों को तकनीकी जानकारी उपलब्ध करवाना।
- ❖ उत्पादनकर्ता व उपभोक्ता के मध्य दूरी को कम करना।
- ❖ समय पर अच्छी गुणवत्ता वाला खाद–बीज उपलब्ध करवाना।
- ❖ उत्पादित फसलों की ग्रेडिंग करवाना।

शेयर धारकों की आय में वृद्धि हेतु प्रयास–

किसानों की आय वृद्धि एवं उनकी फसल की जोखिम को कम करने के हेतु किसानों द्वारा लिये गये फसली ऋण को बैंक में समयानुसार जमा करवाने हेतु प्रेरित किया गया। सभी किसानों के फसली ऋण वापसी के समय पर जमा होने से किसानों का फसली बीमा हुआ परन्तु 20 प्रतिशत किसानों को ही फसली ऋण का लाभ प्राप्त हो सका। जिससे किसानों के द्वारा दिया जाने वाला ऋण अदायगी में ब्याज पर छुट का सहयोग मिला। किसानों द्वारा उत्पादित फसलों की बिक्री नेफड कम्पनी को करवायी गई। आवश्यक दस्तावेज–पटवारी रिर्पोट तैयार करवाकर ऑनलाइन एस.एम.एस. आने पर उनके माल की तुलाई हुई। जिसमें मूंग की फसल किसानों द्वारा बेची गई जिसमें–

बीज की उपलब्धता–

किसानों की आवश्यकता पूर्ति हेतु समयानुसार प्रमाणित बीज उपलब्ध करवाया गया। जिसमें मूंग, उडद तथा बाजरा मुख्य रहा। अच्छी कम्पनीयों के प्रमाणित बीज जिसमें "दिनकर सीडस व सी.एस.वी.–15 हैदराबाद" ज्वार की अच्छी पैदावार मिली। मगर वर्षा की अनीयमितता के कारण किसानों की फसल भी खराब हुई। स्थानीय बीज जिन किसानों द्वारा किया गया उनकी पैदावार 15–20 प्रतिशत उत्पादन कम हुआ।

कम्पनी बोर्ड बैठक–

कम्पनी बोर्ड बैठक लॉकडाउन के चलते कम हुई। जिसमें आगामी वर्श की कार्य योजना तथा गत माह में किये गये कार्यो की समीक्षा नहीं होने के कारण कम्पनी की आय नहीं के बराबर रही।

पी.आई.एम.सी. बैठक–

किसान समृद्धि प्रोड्युसर कम्पनी लिमिटेड द्वारा किये गये कार्यो की समीक्षा तथा कार्यक्रम का मूल्यांकन किया जाता है। कार्यक्रमों की निगरानी हेतु कमेटी का गठन किया हुआ है। जिसमें नाबार्ड डी.डी.एम. अधिकारी, कृषि पर्यवेक्षक, संस्थान सचिव किसान संगठन बोर्ड सदस्यों द्वारा अपनी योजनाओं की जानकारी प्रदान की गई तथा किसानों को लाभ प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया गया।

स्वयं सहायता समूह गठन कार्यक्रम
Self Help Group Formation Programme 2023-24

ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी–अजमेर के द्वारा पिछले 22 वर्षो से अजमेर व नागौर जिले में महिला सशक्तिकरण हेतु महिला स्वयं सहायता समूह गठन व संचालन निरन्तर किया जा रहा है। गठित महिला समूहों में महिलाओं को संगठित किया जाता है। क्योकि समूह स्तर पर महिलाओं को एक मंच प्रदान किया जाता है। इस मंच पर महिलायें एकत्रित हो कर सर्वप्रथम आर्थिक स्तर के बारे में मंथन करके महिलाओं को छोटी–छोटी बचत करना सिखाया जाता है। समूह गठन के 6 माह बाद समूह को बैंक से जोडा जाता है। ताकि महिलाओं को वित्तीय जानकारी मिले। बैंक में समूह के नाम से बचत खाता खोला जाता है और जब समूह को लोन की आवश्यकता हो तब समूह बैंक से लोन लेने के लिए आवेदन कर सकता है।

ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओ को लोन लेने में बहुत ज्यादा तकलीफ होती थी या फिर महिलाओ को कोई भी बैंक लोन देने में असमर्थ थी। संस्थान ने बैंको को समझाया की महिला स्वयं सहायता समूह को लोन दिया जाये और 100% रिक्वरी की जिम्मेदारी संस्थान के शुरूवात में ली। जिससे बैंको को धीरे–धीरे महिला स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम पर विश्वास होने लगा था।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी–अजमेर के द्वारा वर्तमान में अजमेर जिले में समुह से जुड़ी महिलाओं को 15 हजार से 75 हजार रूपये बैंक लोन समूह गारंटी पर मिल जाता है। जिससे महिला अपनी आजीविका को बढ़ाने का कार्य कर सकती है। महिला समूहों का गठन ग्रामीण क्षेत्रों में किया जाता है ताकि महिलायें आत्मनिर्भर बन सकें। इस प्रकार महिलायें स्वयं सहायता

समूह के माध्यम से ग्राम पंचायत, अन्य सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के सम्पर्क में आने से सामाजिक विकास में भी उनकी भागीदारी सुनिश्चित हो रही है। संस्थान उसी उद्देश्य के अनुरूप कार्य कर रही है।

संस्थान आई.सी.आई.सी.आई. बैंक के साथ जुडकर समूहो को उनकी आवश्यकता के अनुसार बैंक लोन दिलवाती है। समूह को प्रथम लोन प्रति महिला को 15000/– रू. का दिलवाती है ताकि महिला को बैंक और समूह में लेनदेन की जानकारी हो सके उसके बाद समूह की बचत के अनुसार आई.सी.आई.सी.आई. बैंक लोन देती है। आई.सी.आई.सी.आई. बैंक हर माह संस्थान द्वारा संचालित समूहो को 2 से 3 करोड रूपये का बैंक लोन देती है। संस्थान के समूहो की 100% रिक्वरी है जो कि समूहो की गुणवत्ता और जागरूकता को दर्शाती है।

उद्देश्य–

1. अलग–अलग महिलाओं को एक समूह में संगठित करना।
2. महिलाओं को जागरूक करना।
3. महिलाओं को समूह के माध्यम से बैंक से जुडाव करना।
4. बैकों से ऋण की पूर्ति करना।
5. महिलाओं को स्वरोजगार के प्रति जागरूक करना।
6. महिलाओं के हुनर को निखारना।
7. सरकारी व गैर सरकारी संगठनों से जुडाव करना।
8. प्रशिक्षणों के माध्यम से क्षमतावर्धन करना।
9. शिक्षित करना।
10. स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाना।
11. महिलाओं द्वारा बनाये गये उत्पाद को उचित दामों में बजार में बेचना।
12. बाल विवाह व कन्या भ्रूण हत्या को रोकना।
13. ज्यादा से ज्यादा महिलाओ को रोजगार से जोडना।

रणनीति :–

- ❖ महिलाओं को जागरूक करके सरकारी व गैर सरकारी गतिविधियों में ज्यादा सहभागी बनाना।
- ❖ क्षेत्र, गाँव व महिलाओं का चयन करके समूह गठन करना।
- ❖ बचत की आदत निरन्तर डालना।
- ❖ बैंकों से जोडकर ऋण उपलब्ध करवाना।
- ❖ महिलाओं की आवश्यकता पढने पर महिलाओं से मद्द करवाना।

समूह बचत खाता खुलवाना– महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन करके 6 माह बाद ICICI बैंक में समूह का बचत खाता खुलवाया जाता है ताकि समूह का बैंक से जुडाव हो सके और बैंक की गतिविधियों को जान सके। जब समूह को ऋण लेने की आवश्यकता हो तो बैंक लोन के लिए समूह आवेदन कर सके।

समूह सदस्यो को बीमा से जोडना– महिला समूह के सदस्यो को बीमा के प्रति जागरूक करना और लोन का बीमा के साथ जीवन बीमा से जोडना ताकि भविष्य में महिला के साथ किसी प्रकार की दुर्घटना हो तो उसके परिवार को बीमा से अधिक सहायता मिल सके।

शिविरों का आयोजन– स्वयं सहायता समूह से जुडी महिलाओं को स्वास्थ्य शिविरों से जोडकर लाभान्वित किया। जैसे कि महिला कानून, श्रमिक के अधिकार, श्रमिक कार्ड बनवाना, परिवार नियोजन शिविर इत्यादि शिविरों के साथ हर वर्ष महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। उसमे महिलाओं द्वारा किये गये कार्यो व अनुभवो का आपस में बताया जाता है। ताकि एक दूसरी महिलाओं से प्रेरणा मिलती है।

समूह प्रशिक्षण– महिला स्वयं सहायता समूहों का क्षमतावर्धन, लीडरशीप, लघु उद्योग व समूह संचालन के प्रशिक्षण समय–समय पर दिये जाते है। ताकि समूहों की गुणवत्ता बनी रहे और समूह सदस्यों को रोजगार से जोडा जा सके।

समूह ऑडिट– संस्थान द्वारा गठित समूहों की हर वर्ष ऑडिट की जाती है, और समूहों की वित्तीय स्थिति का आंकलन किया जाता है। ऑडिट के बाद समूह लाभांश भी सदस्यो को वितरण किया जाता है।

समूह ग्रेडिग– महिला स्वयं सहायता समूहो की गुणवता को जाँचने के लिए ग्रेडिंग की जाती है और ग्रेडिंग के बाद जो भी समूह मे खामिया रहती है उसके लिए योजना बनाकर प्रशिक्षण दिया जाता है।

समूह बैंक लोन– जब समूह गठन के 6 माह बाद समूह का बचत खाता खुल जाता है तब समूह बैंक से लोन लेने के लिए आवेदन करता है। बैंक लोन लेने के समय समूह के सभी सदस्यों का उपस्थित होना आवश्यक होता है ग्रुप फोटो ली जाती है ताकि भविष्य में कोई महिला इनकार नही कर सकती है क्योकि ग्रुप फोटो के साथ लोन फाईल में समूह के सभी सदस्यों में जानकारी रहती है। लोन लेते समय समूह लोन राशि, लोन किश्त कितने माह में चुकता करना और बैंक लोन पेनल्टी के बारे में सभी सदस्यो को जानकारी रहती है।

आजीविका वर्धन गतिविधियाँ– ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी–अजमेर के द्वारा गठित महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन व संचालन किया जा रहा है। समूहो को बचत के साथ–साथ आजिविका वर्धन की गतिविधियों की जानकारी दी जाती है। और समय–समय पर प्रशिक्षित किया जाता है। ताकि महिला आत्मनिर्भर बने और आर्थिक रूप से भी सक्षम हो सके। संस्थान विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से आजीविका वर्धन गतिविधियों से जोडने में सफल होती है। ताकि समूह की महिला बैंक से लोन लेती है उसे समय पर बैंक को वापिस चुकता करने में सक्षम होती है।

महिला स्वयं सहायता कार्यक्रम अन्तर्गत भिनाय ब्लॉक के 50 सदस्यों को कस्टमर हाईजिंग प्रोग्राम से जोडा गया जिसमें प्रति सदस्य 2.30 घण्टा टैक्टर द्वारा खेती हकाई कार्य किया गया जो 100% मुफ्त था महिला सदस्यो को लगभग 100000/– रूपये का सीधा लाभ मिला साथ ही समय पर कार्य पूर्ण हो गया।

कोरोना के प्रति जागरूकता :– ग्रामीण महिला विकास संस्थान (Gramin Mahila Vikas Sansthan) ने 2023–24 के दौरान राजस्थान के अजमेर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना वायरस (COVID-19) के प्रति जागरूकता बढाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए।
प्रमुख गतिविधियॉ–

- **स्वास्थ्य जागरूकता अभियान**– GMVS ने महिलाओ और ग्रामीण समुदायो को COVID-19 के लक्षण, रोकथाम के उपाय, और टीकाकरण के महत्व के बारे में शिक्षित किया।
- **टीकाकरण प्रोत्साहन**– संस्थान ने ग्रामीण क्षेत्रों में टीकाकरण के प्रति विश्वास बढाने और लोगो को टीका लगवाने के लिए प्रेरित किया।
- **सामुदायिक सहभागिता**– स्थानीय स्वयं सहायता समूहो (SHGs) और पंचायतो के सहयोग से जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिससे समुदाय में स्वास्थ्य के प्रति सजगता बढी।
- **संचार माध्यमों का उपयोग**– पोस्टर, पर्चे, और सामूहिक बैठको के माध्यम से COVID-19 से संबन्धित जानकारी का प्रसार किया गया।

वितरित खाद्य सामग्री

मास्क वितरण

भोजन के पैकेट वितरण

GRAMIN MAHILA VIKAS SANASTHAN

Arbridged Receipt and Payment Account

(For The year ending 31/03/2024)

RECEIPTS	AMOUNT	PAYMENTS	AMOUNT
Opening Balance		Programme Expenses	12038022
Cash In Hand	46982	Payment of Advance/ Loan	1152534
Cash at Bank	1507789		
		Closing Balance	
Grant In Aid	10305516	Cash In hand	474143
Membership fees	16500	Cash At Bank	101259
Bank Interst	17897		
Loan and Advances	1471274		
Other Receipt	400000		
Total	**13765958**	**Total**	**13765958**

Consolidated

Arbridged Balance Sheet as on 31.03.2024

LIABILITIES	AMOUNT	ASSETS	AMOUNT
		Fixed Assets	1764273
Loan and Advances	16,60,471	Grant Receivable	2175800
Sundry Creditors against Program receipts	20,07,979	Loans and Advances	1731547
Current liabilities	25,78,572		
		Cash & Bank balance	575402
	62,47,022		62,47,022

For S S Verma & Co
Chartered Accountants

(S. S. Verma)
Prop.
Jaipur
30/12/2024

For Gramin Mahila Vikas Sansthan

(Shankar Singh Rawat)
Secretary
सचिव
ग्रामीण महिला विकास संस्थान
बूघानी, किशनगढ़
जिला–अजमेर (राज.)

नोडल एजेन्सी भ्रमण की झलक

विश्व पर्यावरण दिवस की झलक

मकर सक्रांति उत्सव की झलक

शहीद दिवस पर आयोजित कार्यक्रम की झलक

सामान्य जागरुकता एवं क्षमता निर्माण बैठकों की झलक

एक्सपोजर भ्रमण की झलक

तकनीकी एजेन्सी के दौरे की झलक

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

जनहित व सेवा कार्यों में लगातार सक्रिय...

संस्थान की गतिविधियाँ

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

बाजरा प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन कार्यक्रम

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

जनहित व सेवा कार्यों में लगातार सक्रिय...

संस्थान की गतिविधियाँ

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

जनहित व सेवा कार्यों में लगातार सक्रिय...

संस्थान की गतिविधियाँ

सुर्खियों में ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

टारगेट इन्टरवेन्शन कार्यक्रम, चित्तौड़गढ़

जनहित व सेवा कार्यों में लगातार सक्रिय...

संस्थान की गतिविधियाँ

ग्रामीण महिला विकास संस्थान (GMVS)

ग्राम व पोस्ट–बूबानी, वाया–गगवाना
जिला–अजमेर 305023 (राज.) भारत
मोबाईल : +91–9672979033, , 9672979032

E-mail : bubanigmvs@gmail.com, Visit us : www.gmvs.org.in